सर्वहारा दृष्टिकोण

सोशलिस्ट यूनिटी सेन्टर ऑफ इण्डिया (कम्युनिस्ट) का मुखपत्र (पाक्षिक)

वर्ष-28 अंक-4 21 फरवरी से 7 मार्च, 2013 मुख्य संपादक - कॉमरेड कृष्ण चक्रवर्ती मूल्य : 2 रुपये

एआईएमएसएस द्वारा आयोजित अखिल भारतीय महिला सम्मेलन

महिला आन्दोलन में एक मील का पत्थर

29-31 जनवरी 2013 को तिरुवनन्तपुरम, केरल के लोग ऑल इण्डिया महिला सांस्कृतिक संगठन (एआईएमएसएस) द्वारा आयोजित तीसरे अखिल भारतीय महिला सम्मेलन की शानदार घटना के गवाह बने। देश भर में विभिन्न मुद्दों पर महिलाओं द्वारा किए जा रहे जोरदार संघर्षों के दौरान ही यह सम्मेलन आयोजित किया गया। भारतीय महिलाओं के संघर्ष के एक हथियार एआईएमएसएस ने महिलाओं को अपने अधिकारों को हासिल करने और अपनी मुक्ति के पथ का निर्धारण करने के लिए सशक्त, संगठित और कष्टसाध्य संघर्ष की खातिर तैयार करने के नजरिए से इस सम्मेलन का आयोजन किया था।

सम्मेलन से पहले की तैयारियाँ

तीसरे अखिल भारतीय महिला सम्मेलन की मेजबानी के लिए, एआईएमएसएस की केरल राज्य कमेटी ने एक राज्य स्तरीय स्वागत कमेटी का गठन किया था। इस कमेटी के चेयरमेन थे जस्टिस कृष्ण अय्यर, वाइस चेयरपर्सन्स थे केरल युनिवर्सिटी के पूर्व प्रो-वी.सी. और

(शेष पृष्ठ 3 पर)

एआईयूटीयूसी का 20वें अखिल भारतीय सम्मेलन

मजदूर मार्क्सवाद – लेनिनवाद की महान विचारधारा से लैस हों और मानव द्वारा मानव के शोषण से मुक्ति के लिए संघर्ष का नेतृत्व करें –प्रभाष घोष

(बंगलुरु में 6 जनवरी 2013 को हुए एआईयूटीयूसी के 20वें अखिल भारतीय सम्मेलन के प्रतिनिधि अधिवेशन में कॉमरेड प्रभाष घोष का भाषण)

कॉमरेड प्रसिडेण्ट और कॉमरेड डेलिगेटो,

सबसे पहले मैं भारतीय क्रान्तिकारी सर्वहारा की पार्टी एसयूसीआई(सी) की ओर से विदेशी डेलिगेट कॉमरेडों, ऑल इण्डिया यूटीयूसी के नवनिर्वाचित अध्यक्ष, महासचिव व कार्यकारिणी सदस्यों और यहाँ उपस्थित तमाम डेलिगेटों को क्रान्तिकारी बधाई देता हूँ। यह समापन सत्र है और जल्द ही यह सम्मेलन समाप्त हो जाएगा। हालांकि यह सम्मेलन सम्पन्न हो जाएगा, पर संघर्ष के नये दौर का शुभ आरम्भ होना चाहिए। हमारे देश के शोषित लोगों के लिए यह सम्मेलन क्या संदेश देगा? हमारे देश में ट्रेड यूनियन सम्मेलन कोई कम नहीं होते हैं। लेकिन इस तरह का सम्मेलन सचमुच विरला होता है। यहाँ बुर्जुआ पार्टियों, सोशल डेमोक्रेटिक पार्टियों की भी ट्रेड यूनियनें हैं। वे भी सम्मेलन करती हैं लेकिन उनके सम्मेलन महज रिवाजी और औपचारिक प्रकृति के होते हैं और उन्हें महज बहुत बड़े तामझाम और दिखावे वाली बड़ी-बड़ी दावतों, पिकनिक पार्टियों में तब्दील कर दिया जाता है । उनके सम्मेलनों पर वे करोड़ों रुपए खर्च करते हैं। कौन उन्हें धन

(शेष पृष्ठ 2 पर)

एसयूसीआई(सी) ने की सजावटी अध्यादेश को वापस लेने और महिलाओं पर यौन हिंसा रोकने के लिए उचित जनवादी प्रक्रिया का अनुसरण करते हुए व्यापक कदम उठाने की मांग

एसयूसीआई(सी) के महासचिव कॉमरेड प्रभाष घोष ने 2 फरवरी 2013 को निम्नलिखित बयान जारी किया:

यह बहुत विकल कर देने वाला और निंदनीय है कि कांग्रेस-नीत यूपीए सरकार ने जनवादी तौर-तरीकों के न्यूनतम मूल्यों की बेशरमी से ताक पर रख कर हमेशा की तरह संसद को दरकिनार कर, महिलाओं पर यौन हमलों के खिलाफ तथाकथित एक अध्यादेश जारी करने का एकतरफा फैसला लिया और गत दिसम्बर में दिल्ली में एक 23 वर्षीय फिजियोथ्रेपिस्ट से हुए जघन्य सामूहिक बलात्कार और हत्या के बाद गठित जस्टिस वर्मा कमेटी की ज्यादातर सिफारिशों को छोड़ दिया गया। यह भी याद दिला दें कि बहुत सी राजनैतिक पार्टियों, महिला संगठनों, प्रतिष्ठित व्यक्तियों और सही सोच रखने वाले लोगों ने कई मूल्यवान सुझाव वर्मा कमेटी को दिए थे, उनमें से बहुत से इसने स्वीकार कर लिए थे। कमेटी के सुझावों पर कोई चर्चा-बहस होने दिए बिना और विभिन्न हलकों तथा देश के जनवाद-पसंद लोगों को सुनने की जरा भी परवाह किए बिना सरकार ने एक सजावटी अध्यादेश जारी करने की जल्दबाजी की, विशेषकर तब जब संसद का बजट सत्र जल्द ही शुरू होने वाला है और इस बात का भी ध्यान रखा गया है कि किसी कमी, ड्यूटी की अवहेलना या जानबूझकर की गई लापरवाही के मामले में कानून लागू करने वाली मशीनरी को सख्त कानूनी प्रावधानों के दायरे के तहत लाने के ज्यादातर सुझावों को शामिल नहीं किया जाए, न ही सशस्त्र बलों के सदस्यों द्वारा यौन अपराधों के मामलों पर साधारण फौजदारी कानूनों के तहत मुकदमा चलाने (यानी आर्म्ड फोर्सेस स्पेशल पावर्स एक्ट के रिव्यू) के सवाल को इसमें स्थान दिया जाए। अध्यादेश लागू करने में सरकार द्वारा दिखाई गई असाधारण जल्दबाजी और पारदर्शिता का सम्पूर्ण अभाव सिर्फ यही दर्शाता है कि महिलाओं पर बढ़ते हिंसा और यौन हमलों को रोकने में सरकार कतई उत्सुक नहीं है और इसकी बजाए दण्डात्मक कानूनों में तेजी से परिवर्तनों के झांसे के तहत ऐसे एक गंभीर मुद्दे को बखूबी दफना दिए जाने के नापाक इरादों को आगे बढ़ा रही है। हम इस अध्यादेश को तुरन्त वापस लिए जाने की मांग करते हैं और प्रतिवाद कर रहे देश के लोगों का आह्वान करते हैं कि वे एकजुट हों और संगठित रूप से अपनी आवाज बुलन्द करें ताकि महिलाओं के खिलाफ बढ़ते अपराधों को रोकने और उनकी इज्जत तथा मर्यादा की रक्षा करने के लिए जस्टिस वर्मा कमेटी की सिफारिशों के अनुरूप जरूरी चैक एण्ड बैलेंस के साथ कानून के आवश्यक संशोधन सहित व्यापक कदमों को उचित जनवादी प्रक्रिया का अनुसरण करते हुए लागू करने के लिए सरकार को बाध्य किया जा सके।

एआईयूटीयूसी.....

(पृष्ठ 1 का शेष)

मुहैया कराता है? निश्चित ही मजदूर वर्ग तो नहीं। क्यों औद्योगिक घराने, बड़े व्यापारी इन तथाकथित ट्रेड यूनियनों को धन मुहैया कराते हैं, क्योंकि वे पूँजीपति वर्ग के भरोसेमंद प्रतिनिधि हैं। लेनिन की भाषा में जो मजदूर वर्ग आन्दोलन को छिन्न-भिन्न और गुमराह करने के उस्ताद होते हैं। उन देशों में जहाँ बुर्जुआ जनतंत्र लम्बे अर्से से कायम है वहाँ शासक पूँजीपति वर्ग मजदूर आन्दोलन को दबाने के लिए न केवल हिंसा का सहारा लेता है बल्कि मजदूरों को गुमराह करने के लिए हर तरह की तिकड़में, धोखेबाजी के हथकण्डे भी अपनाता है। मजदूर नेताओं के चोले में, मजदूर वर्ग की स्वार्थ रक्षा का स्वांग भरते हुए पूँजीपति वर्ग के ये प्रतिनिधि अपने आकाओं के वर्ग स्वार्थ की रक्षा करते हैं। सोशल डैमोक्रेट भी इसी काम को वाम शब्दावली और मार्क्सवादी लफ्फाजी की आड़ में और भी चालाकी से करते हैं। मजदूरों को ये दलाल पट्टी पढ़ाते हैं कि ''यह आन्दोलन का समय नहीं है। अगर तुमने आन्दोलन किया तो नौकरी से निकाल दिये जाओगे। इससे अच्छा है कि कुछ मजदूरों की छंटनी को स्वीकार कर लो वरना सबकी छंटनी कर दी जाएगी। हड़ताल पर मत जाओ। अगर गये तो कारखाना बंद हो जाएगा। बेहतर है कि लेबर ट्रिब्यूनल जाओ।'' यह कोई इतफाक नहीं है कि मजदूर नेताओं में से ज्यादातर ही मालिकों के दलाल के तौर पर जाने जाते हैं। कभी-कभी गुस्साये मजदूर इन तथाकथित मजदूर नेताओं को पीट भी देते हैं। लेकिन ऑल इण्डिया यूनाइटिड ट्रेड यूनियन सेण्टर के बैनर तले संगठित, महान मार्क्स, एंगेल्स, लेनिन, स्तालिन, माओ त्से-तुंग और शिवदास घोष की शिक्षाओं से लैस क्रान्तिकारी योद्धा हमारे देश के विभिन्न हिस्सों में मजदूर वर्ग को शिक्षित, संगठित और प्रेरित करने के लिए गहरी निष्ठा के साथ संघर्षरत हैं। सम्मेलन उनके लिए एक बहुत ही गंभीर कार्यक्रम है। जब विभिन्न जगह, प्रतिकूल परिस्थितियों में मजदूर वर्ग संघर्षों को संचालित करते हुए वे तरह-तरह के तजुर्बे हासिल करते हैं, वे अनेक तरह की मुश्किलों का सामना करते हैं। इसलिए वे इस तरह के सम्मेलनों के मौके पर अपने तजुर्बों का आदान-प्रदान करने के लिए, एक दूसरे से सीखने के लिए, कार्ययोजना तय करने के लिए, सिर्फ कागजों पर ही नहीं बल्कि इसे अपने रोजमर्रा के संघर्ष के साथ लागू करने के लिए कभी-कभी इनमें इकट्ठा होते हैं। हमारे देश की इस नाजुक घड़ी में, मजदूर वर्ग, शोषित मेहनतकश लोगों के पास इस सम्मेलन का क्रान्तिकारी संदेश पहुँचना चाहिए। मार्क्सवाद, लेनिनवाद, कॉमरेड शिवदास घोष विचारधारा का एक छात्र होने के नाते मैं आश्वस्त हूँ कि आप इस जिम्मेदारी का निर्वाह तहे-दिल से करेंगे।

पूँजीवाद का असमाधेय संकट

कॉमरेड्स आप सभी जानते हैं कि किस प्रकार की गंभीर आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, नैतिक समस्याओं का सामना आज हम कर रहे हैं। न केवल हमारे देश में, बल्कि अन्य पूँजीवादी-साम्राज्यवादी देशों में भी स्थिति ऐसी ही है। असल में, गत शताब्दी की शुरूआत में प्रथम विश्व युद्ध से पहले सर्वहारा के महान नेता महान लेनिन ने विश्व के मजदूर वर्ग के सामने रखा था कि मरणासन्न पतनशील अवस्था यानी साम्राज्यवादी अवस्था में पहुँच जाने के साथ ही पूँजीवाद का प्रगतिशील विकास का दौर समाप्त हो गया है। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद महान स्तालिन ने कहा था कि प्रथम और द्वितीय विश्व युद्ध से पहले पूँजीवाद को जो भी सापेक्ष आर्थिक स्थायित्व प्राप्त था दूसरे विश्व युद्ध के बाद वह अब नहीं रहा। इसके कुछ वर्षों बाद हमारे नेता और शिक्षक कॉमरेड शिवदास घोष ने व्याख्या करके दिखाया था कि विश्व पूँजीवाद हर घण्टे संकट का सामना कर रहा है। इस संकट से उबरने के लिए जो कोई भी तरीका यह अपना रहा है उससे यह और भी गहरे संकट में धंसता जा रहा है। आज पूँजीवाद हर मिनट, हर सैकण्ड संकट का सामना कर रहा है। अमेरिका जिसे एक समय विश्व पूँजीवादी अर्थव्यवस्था का ईंजन कहा जाता था, आज गहरे से गहरा डूबता जा रहा है। एक समय यह सबसे बड़ा कर्जदाता देश था, अब यह दुनिया में सबसे बड़े कर्जवान देश में तब्दील हो गया है। अमेरिकी अर्थव्यवस्था उधार और कर्ज पर टिकी है और वेण्टीलेटर पर है। यह प्रशांत महासागर में डूब रही है। यही हाल दूसरे शक्तिशाली पश्चिमी साम्राज्यवाद देशों का है। वे भी एटलांटिक महासागर में डूब रहे है। जबरदस्त मंदी और डिप्रेशन का खतरा उन्हें सता रहा है। गम्भीर वित्तीय समस्याओं से निजात पाने के लिए हाल ही में हुए एक सत्र में अमेरिकी अर्थशास्त्रियों ने स्वीकार किया कि जो भी उपाय वे सुझा रहे हैं वे अस्थाई हैं क्योंकि वे कोई स्थाई समाधान नहीं ढूँढ पा रहे हैं। पूँजीवादी अर्थव्यवस्था में बाजार एक असमाधेय संकट से रू-ब-रू है। इसका बाजार सिकुड़ रहा है और ऐसे ही सिकुड़ता रहेगा। क्योंकि बाजार का मतलब है लोगों की खरीद शक्ति और गरीबी के मारे बेरोजगार आम आवाम की वस्तुत: कोई खरीद शक्ति नहीं बची है। शासक पूँजीपतियों की गिद्ध दृष्टि अधिकतम मुनाफा कमाने पर है। मुनाफे के अधिकतम होने का मायने है अधिकाधिक शोषण। अधिकतम शोषण बढ़ती बेरोजगारी को पैदा कर रहा है, व्यापक पैमाने पर छंटनी को तेज कर रहा है। इसलिए खरीद शक्ति तेजी से गिर रही है और बाजार तेजी से सिकुड़ रहा है। पूँजीपति वर्ग आज इस बाजार संकट से रू-ब-रू है। लगभग तमाम पूँजीवादी-साम्राज्यवादी देश राजकीय कर्ज की समस्या से ग्रस्त हैं। हालिया ताजा आंकड़ों के मुताबिक अमेरिका पर 16 लाख करोड़ डॉलर का कर्ज है। भारत भी अभूतपूर्व वित्तीय और चालू खाते के बहुत बड़े घाटे से रू-ब-रू है। सभी पूँजीवादी-साम्राज्यवादी देशों की स्थिति यही है। अत: तमाम बुर्जुआ देश खुद को कर्ज और उधार पर कायम रखे हुए हैं। संकट गहन और अभूतपूर्व है। इसीलिए हम छंटनी, बेरोजगारी, टैक्सों में बढ़ोतरी, महंगाई, शिक्षा और अन्य सुविधाओं में कटौती की समस्या से रू-ब-रू है। यह सब लगातार जारी है और बढ़ता जा रहा है।

ट्रेड यूनियन और जनआन्दोलन का वर्तमान परिदृश्य

इन हालात में खुद को और तमाम तबकों के शोषित-पीड़ित लोगों को सही संघर्ष मे शामिल कराने की ऐतिहासिक जिम्मेदारी मजदूर वर्ग की है। यही समय की अति महत्वपूर्ण जरूरत है। कुछ सालों पहले ट्रेड यूनियनों के लिए वेतन बढ़ोतरी, बेहतर सेवा शर्तों, काम के स्थायित्व, रोजगार सुरक्षा, चिकित्सा सहायता, मकान किराये व अन्य हित लाभों के लिए मांगें उठाने का थोड़ा बहुत मौका था। इसलिए इन आर्थिक मांगों के लिए संघर्ष चलाये गए थे लेकिन अब यह मौका भी संकुचित किया जा रहा है। अब मजदूरों की व्यापक पैमाने पर छंटनी की जा रही है। इसलिए इस छंटनी को रोकने की जरूरत है। स्थाई रोजगार नहीं है। मजदूर-कर्मचारियों को अस्थाई तौर पर या ठेके पर नियुक्त किया जा रहा हैं। वेतन कटौती और वेतन जाम धड़ल्ले से जारी है। संघर्षों से अर्जित पहले की तमाम सुविधाएं और हित लाभ अब एक एक करके छीने जा रहे हैं। उद्योगपतियों को समझौतों और श्रम कानूनों का उल्लंघन करने की खुली छूट दी जा रही है। यहाँ तक कि एक यूनियन बनाना भी मुश्किल हो गया है। हाँ, पूँजीपति वर्ग के एजेण्ट यूनियन बना सकते हैं लेकिन यदि मजदूर वर्ग के स्वार्थ की पूर्ति के लिए कोई प्रयास किया जाता है तो संगठकों को परेशान किया जाता है और नौकरी से निकाल दिया जाता है। वर्तमान स्थिति ऐसी है और इस समय आप सुसंगठित, दीर्घस्थाई जुझारू आन्दोलन के बिना इस हमले का मुकाबला नहीं कर सकते हैं, एक मांग तक हासिल नहीं कर सकते हैं। ऐसे आन्दोलन कौन विकसित कर सकता है, जो ट्रेड यूनियन इस युग के अत्यन्त क्रान्तिकारी चिन्तन मार्क्सवाद-लेनिनवाद-शिवदास घोष की चिन्तनधारा से लैस हो केवल वही इसे विकसित कर सकती है यह हमें समझना चाहिए। यह है तस्वीर का एक पहलू।

तस्वीर का दूसरा पहलू भी है। समस्त पूँजीवादी-साम्राज्यवादी दुनिया में जन आन्दोलन की लहर चल रही है। अमेरिका तक में हम आन्दोलन का जबरदस्त उफान देख रहे है जो 'वाल स्ट्रीट दखल करो' आन्दोलन के तौर पर मशहूर हो गया है। कोई नेतृत्व नहीं था। पहले से कोई सुसंगठित तैयारी नहीं थी। स्वत:स्फूर्त आन्दोलन फूट पड़ा था जो 7 महीनें तक चला था, अमेरिका के शासक इससे काँप उठे थे। यूरोप में मजदूरों व दूसरे तबकों के मेहनतकशों की लगातार हो रही हड़तालें पूरे प्रशासन को अक्सर ठप्प कर दे रही हैं। इन हड़तालों को किसी क्रान्तिकारी पार्टी द्वारा संगठित नहीं किया गया था। जीवन की समस्याएं इतनी असहनीय हैं कि इसने मजदूर वर्ग को आन्दोलन, संघर्ष और प्रतिवाद की तरफ धकेल दिया है। हमारे देश में भी हम जबरन भूमि-अधिग्रहण का लोगों द्वारा प्रतिरोध करते, अन्याय-अत्याचार के खिलाफ मजदूर वर्ग के जुझारू आन्दोलनों का फूट पड़ना देख रहे हैं। इन्हीं में से एक अभी हाल ही में गुड़गाँव में हुआ था। अभी कुछ दिनों पहले दिल्ली में एक लड़की के साथ हुए जघन्य सामूहिक बलात्कार के विरोध में आक्रोशित लोगों का स्वत:स्फूर्त ढंग से विशाल जन उभार हमने देखा। उस समय दिल्ली में कड़ाके की ठण्ड पड़ रही थी। प्रदर्शनकारियों पर पुलिस ने आँसू गैस के गोले छोड़े, बेरहमी से लाठियाँ बरसाई और पानी की बौछारें करने वाली तोपें दागी। लेकिन प्रदर्शनकारियों को झुका नहीं पायी। इन प्रदर्शनकारियों में काफी तादाद में नवयुवतियाँ भी शामिल थी। उनकी तादाद लगातार बढ़ती ही गई, तमाम हमलों का बहादुरी से मुकाबला किया और इन्साफ चाहिए की अपनी माँग पर अटल रहे। इस आन्दोलन ने देश भर में लागों को सड़कों पर उतरने और विरोध में उठ खड़े होने के लिए प्रेरित किया। वह आन्दोलन अभी भी जारी है। इस मामले में भी किसी पार्टी या किसी और संगठन ने आह्वान नहीं किया था। लेकिन लोग न केवल उस बेचारी लड़की पर हुए जघन्य अपराध के खिलाफ बल्कि अपने जीवन-जीविका पर लगातार बढ़ते चौतरफा हमलों के खिलाफ भी इतने कुपित थे कि वे स्वत:स्फूर्त ढंग से विस्फोट की तरह फट पड़े। पहले ही बुर्जुआ मीडिया चिंतित है और बोल रहा है कि यह असंतोष मौजूदा सरकार, मौजूदा व्यवस्था, मौजूदा संसदीय जनतंत्र के ढांचे, मौजूदा न्यायपालिका और मौजूदा कानून-व्यवस्था की मशीनरी के खिलाफ है। इसलिए मीडिया सरकार को सलाह दे रहा है कि इस मामले को जल्दी से निपटाये और यह सुनिश्चित करे कि आन्दोलन तुरन्त शांत हो जाए। आन्दोलन की चिंगारियाँ चारों ओर फैलती दिखई दे रही हैं।

मजदूर वर्गीय संघर्षों को तार्किक परिणति पर कैसे पहुंचाया जाय

इन स्वत:स्फूर्त आन्दोलनों को कौन संगठित रूप दे सकता है? केवल मार्क्सवाद-लेनिनवाद, कॉमरेड शिवदास घोष विचारधारा से लैस नेतृत्व ही यह कर सकता है। जैसा कि एक समय महान मार्क्स-एंगेल्स ने बताया था कि पूँजीवाद ने अपनी कब्र खोदने वाले पैदा कर दिए हैं। कौन हैं वे कब्र खोदने वाले? निश्चित ही मजदूर वर्ग। मजदूर वर्ग पूँजीवाद-साम्राज्यवाद की कब्र खोदेगा। मजदूर वर्ग अपने आप से इसे नहीं कर सकता है। कब्र खोदने के लिए निश्चित ही इसे एक हथियार की जरूरत है। यह हथियार मार्क्सवाद है और इसे हासिल करने की जरूरत है। यह समझना होगा और इसमें पारंगत होना होगा। मार्क्सवाद के विज्ञान को एंगेल्स, लेनिन, स्तालिन, माओ त्से-तुंग, शिवदास घोष ने आगे और भी विकसित किया। जीवन, नई-नई परिघटनाओं के उद्भव, विज्ञान की प्रगति और समस्याओं से कदम से कदम मिलाते हुए यह लगातार उन्नत और समृद्ध होता जा रहा है। विज्ञान की नई-नई खोजों के साथ मार्क्सवाद एक वैज्ञानिक दर्शन होने के नाते और भी विकसित होता रहता है। मजदूर वर्ग की चेतना को उसी के अनुसार विकसित होना चाहिए। वैचारिक शक्ति के बिना वे पूँजीवाद की कब्र नहीं खोद सकते हैं। प्रकृति में यह नियम है कि सभी कुछ अस्तित्व में आता है, विकसित होता है और अस्तित्वहीन हो जाता है। यह नियम प्रकृति में स्वत:स्फूर्त ढंग से लागू होता है। समाज में भी यही नियम लागू होता है लेकिन अलग तरह से। कोई भी नियम अलग-अलग क्षेत्र में अलग-अलग तरह से लागू होता है। इसलिए हर विशेष क्षेत्र में उस नियम के लागू होने की विशेषता व विलक्षणता का अध्ययन करना होता है। प्रकृति में किसी भी परिवर्तन को बाधित या त्वरित करने के लिए चेतना का कोई अस्तित्व नहीं है। लेकिन समाज में मानव चेतना अपनी भूमिका निभाने के लिए अस्तित्वमान होती है। एक वर्ग-विभाजित समाज में उत्पादन सम्बन्धों में मालिक सचेत रूप से मौजूदा व्यवस्था में किसी भी परिवर्तन को बाधित करते हैं, यह तो उत्पादक शक्तियों के इन्सानी हिस्से यानी श्रमशक्ति की जिम्मेदारी बनती है कि मौजूदा व्यवस्था के परिवर्तन के द्वारा विकास की प्रक्रिया को तेज करने की जरूरत को पहचाने और सचेत हों। यह व्यवस्था नियम की अटल प्रक्रिया का अनुसरण करते हुए पुरानी और गयी-बीती हो चुकी है और प्रगति में बाधक बन गई है। पूँजीवाद आज न सिर्फ मरणासन्न व पतनशील है बल्कि यह मृत्युशैया पर पड़ा अपनी अन्तिम सांसें गिन रहा है। लेकिन पूँजीवाद खुद-ब-खुद नहीं मर जाएगा। वक्त का तकाजा यह है कि श्रमशक्ति को अपनी ऐतिहासिक जिम्मेदारी निभानी चाहिए। जब तक श्रमशक्ति राजनीतिक, वैचारिक, सांस्कृतिक, सांगठनिक तौर पर बाकायदा तैयार नहीं हो जाती तब तक जीवन की आर्थिक, राजनैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, नैतिक समस्याएं अधिकाधिक बढ़ती रहेंगी। मरता हुआ पूँजीवाद एक सड़ती हुई लाश की तरह पड़ा रहेगा और सारे समाज को

(शेष पृष्ठ 5 पर)

अखिल भारतीय महिला सम्मेलन

वीरांगनाओं ने ली हर शोषण के खिलाफ लड़ने की शपथ

जाने माने शिक्षाविद डॉ. एन.ए. करीम, अनुभवी ट्रेड यूनियन नेता के.पी. कौसलरामदास, विश्व प्रसिद्ध मूर्तिकार कनाई कुन्हीरमन व ललिता मैथ्यू और सचिव थी शैला के. जोन। एक हजार से ज्यादा जाने माने लेखक, विभिन्न विधाओं के कलाकार, सामाजिक कार्यकर्ता, अध्यापक, डॉक्टर और राज्य के अन्य बहुत से महत्वपूर्ण व्यक्ति इस कमेटी के सदस्य थे।

25 जनवरी 2013, से सम्मेलन पूर्व कार्यक्रमों की शुरूआत हुई। एक जानी-मानी सामाजिक कार्यकर्त्ता श्रीमती विमला मेनन द्वारा सम्मेलन स्थल पर मीडिया सेण्टर का उद्घाटन किया गया। प्रसिद्ध मूर्तिकार कनाई कुन्हीरमन के नेतृत्व में एक आर्टिस्ट कैम्प का आयोजन हुआ, इतिहास के निर्माण में महिलाओं की भूमिका को दर्शाते हुए एक प्रदर्शनी 'स्त्री-शक्ति' का उद्घाटन राज्य की सेवानिवृत मुख्य सचिव श्रीमती बी. वल्सला कुमारी ने किया, आर्टिस्ट कैम्प में तैयार की गई पेण्टिंगों की प्रदर्शनी का उद्घाटन श्री कनाई कुन्हीरमन द्वारा किया गया, केरल की एक विशेष कला 'कधा प्रसंगम' की प्रस्तुति के माध्यम से महान वैज्ञानिक मैडम क्यूरी के जीवन संघर्ष को प्रोफेसर वसंत कुमार सम्बाशिवम द्वारा प्रस्तुत किया गया, प्रसिद्ध जादूगर गोपीनाथ मुतुकड द्वारा एक मैजिक शो 'ज्योति स्त्री शक्ति विषयम' प्रस्तुत किया गया, कवि सम्मेलन, एक नृत्य नाटिका, महिलाओं का कराटे प्रदर्शन आदि विभिन्न प्रोग्रामों में से कुछ थे।

29 जनवरी 2013–खुला अधिवेशन

महिला आन्दोलन जो समय की बेहद जरूरी मांग है को मजबूत करने का मनोभाव तिरूअनन्तपुरम में 29 जनवरी 2013 से बहुत पहले ही तैयार हो गया था। 20 राज्यों से आए प्रतिनिधियों के साथ एक विशाल जुलूस पलायम–शहीद चौक से शुरू हुआ और पुतारी कंदम मैदान, अयंकालिंगर पहुँचा। जैसे-जैसे जुलूस सड़कों से गुजरता गया आवेगपूर्ण नारों से वातावरण गूँज उठा–'महिलाओं पर अत्याचार मुर्दाबाद', 'कन्या भ्रूण हत्या और कन्या शिशु हत्या बन्द करो', 'अपराधियों को सख्त सजा दो', 'नारियों की तस्करी-मुर्दाबाद', इत्यादि। पुतारी कन्दम मैदान जिसका संघर्षों का एक इतिहास है, महिलाओं के एक अन्य ऐतिहासिक संघर्ष को दर्ज करने के लिए तैयार था। तिरूअनन्तपुरम और केरल के अन्य जिलों से हजारों महिलाएं व पुरुष भी तथा विभिन्न तबकों से आए लोग यहाँ जमा हुए थे।

मंच पर विराजमान सभी का और विशाल संख्या में जुटी महिलाओं का गर्मजोशी के साथ स्वागत करते हुए **डॉ. एन.ए. करीम** ने कहा कि यह सम्मेलन ऐसे एक समय होने जा रहा है जब राष्ट्रीय राजधानी में घटी घटनाओं से पूरा देश गहरा विक्षुब्ध और गंभीर रूप से व्यथित है। पुराने आदिम सामंतवादी मूल्बोध लुप्त नहीं हुए हैं। और मूल्यबोध जो नवपूँजीवादी संस्कृति ने पैदा किए हैं, हमारी समस्याओं में इजाफा कर रहे हैं। अत: महिलाओं की मुक्ति के लिए और उनके खिलाफ होने वाले तमाम तरह के अपराधों को रोकने के लिए एआईएमएसएस निरन्तर संघर्षरत है।

सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए सुप्रीम कोर्ट के पूर्व मुख्य न्यायाधीश, राष्ट्रीय मानव अधिकार आयोग के चेयर पर्सन **जस्टिस एम.एन. वैंकट चलैया** ने कहा, ''इसकी कल्पना करना भी असंभव है कि किस प्रकार हमने सदियों से अपनी महिलाओं के साथ बर्ताव किया है और कभी-कभी कुछ नृवैज्ञानिक कहते हैं कि अपनी महिलाओं के साथ बर्ताव और उनका सम्मान करने में कबीलाई समाज हमसे से कहीं ज्यादा बेहतर है। कुछ दिन पहले दिल्ली में और विभिन्न अन्य जगहों पर लोग सड़कों पर उतर आए, वे लड़े। और यह दिल में बहुत जोश भर देने वाली प्रतिक्रिया थी। पुरूष, खासकर नौजवान उस लड़की के लिए सड़कों पर उतर आए थे,जिस पर बलात्कार हुआ और मार दिया गया। उन्होंने दीवार पर लिखी इस इबारत की तरह बता दिया कि शासन पूरी तरह विफल हो गया है। लोग अपने देश के शासन में अपना विश्वास खो चुके हैं। ''मैं सोचता हूँ इस देश में हमें हर चौराहे, हर रेलवे स्टेशन, हर बस स्टैण्ड, स्कूल और कॉलेज पर एक बोर्ड लगा देना चाहिए, 'महिलाओं का सम्मान करो! महिलाओं का सम्मान करो! महिलाओं का सम्मान करो!' महिलाओं के अधिकार सिर्फ कागजों तक सीमित हैं। हर कोई उन अधिकारों को सुनिश्चित मान लेता है। मैं सोचता हूँ हम सभी के लिए हमारी भावी पीढ़ी के बारे में सोचने का वक्त आ गया है।''

एआईएमएसएस की महासचिव **डॉक्टर एच.जी. जयालक्ष्मी** ने अपनी प्रारम्भिक टिप्पणी में कहा कि ''यह एक ऐसा मौका है जब महिलाओं की समस्याएं बढ़ती जा रही हैं। यह मौका महिलाओं के विरुद्ध तमाम अपराधों के खिलाफ एक दृढ़प्रतिज्ञ, संगठित लड़ाई की मांग करता है। कोख से लेकर कब्र तक महिलाओं की समस्याएं हैं। लेकिन जैसा कि हम सब ने देखा अब लोग महिलाओं पर होने वाले अत्याचारों व अपराधों के खिलाफ उठ खड़े हो रहे हैं। पश्चिम बंगाल के नंदीग्राम में भूमि हड़पने के खिलाफ, उड़ीसा में पॉस्को के खिलाफ, आंध्र प्रदेश में 50,000 महिलाओं द्वारा शराब के खिलाफ, केरल में महिलाओं पर हर तरह के अत्याचारों के खिलाफ और अब दिल्ली में विक्षोभ प्रदर्शन के ऐतिहासिक आन्दोलन अंधेरे में रोशनी की एक किरण हैं। हर जगह लोगों से जिस तरह का समर्थन हमें मिल रहा है यह हमें महिलाओं के हित में काम करने के लिए शक्ति प्रदान करता है।''

मुम्बई हाई कोर्ट के पूर्व जज और जाने-माने मानव अधिकार कार्यकर्ता **जस्टिस सुरेश होस्बेट**, सम्मानीय अतिथि थे जो इस अवसर पर बोले। उन्होंने जस्टिस कृष्ण अय्यर को उद्धृत किया जिन्होंने कहा था, ''भारत कभी सुनहरे भविष्य की तरफ कूच नहीं कर सकता जब तक कि इसकी तमाम महिलाएं दमन, वर्जन और अन्याय पूर्ण असमर्थता से मुक्त नहीं हो जाती हैं।'' सिर्फ कानूनों से ही न्याय मिल जाएगा इसके बारे में वे संशयवादी थे। उन्होंने कहा कि महिलाओं के खिलाफ हिंसा का मतलब है महिलाओं के अधिकारों और मूलभूत आजादी का उल्लंघन। उन्होंने भूमण्डलीकरण की नीति की निन्दा की जो महिलाओं पर विनाशकारी प्रभाव डाल रही है। उन्होंने सामाजिक परिवर्तन की जरूरत पर बल दिया।

एसयूसीआई(सी) के पोलिट ब्यूरो सदस्य और ऑल इण्डिया एण्टी इम्पीरियलिस्ट फोरम (एआईएआईएफ) के महासचिव **कॉमरेड माणिक मुखर्जी** ने महिलाओं की मुक्ति के मुद्दे पर एक संक्षिप्त किन्तु मूल्यवान भाषण दिया। (उनका भाषण अलग से दिया जाएगा।)

असम की प्रसिद्ध साहित्यकार **कॉ. निरूपमा बारगोंई** ने असमिया महिलाओं की स्वतंत्रता की पुरानी महान परम्परा की गर्व के साथ प्रशंसा की। दूसरे राज्यों की तरह दहेज प्रथा वहाँ नहीं थी। महिलाओं का बहुत सम्मान होता था और महिलाओं पर कोई अत्याचार नहीं होते थे। लेकिन अब हालात बदल गए हैं। विगत कुछ वर्षों से महिलाओं के साथ छेड़छाड, दहेज हत्याएं, बच्चियों की तस्करी और बलात्कार की घटनाएं सामने आ रही हैं। भारत महिलाओं के लिए सुरक्षित स्थान नहीं है। डॉ. बारगोंई ने सुझाव दिया कि हमारी बच्चियों को स्कूलों में मार्शल आर्ट सिखाया जाना चाहिए ताकि महिलाएं अपना बचाव कर सकें और पुरुषों द्वारा की जाने वाली छेड़छाड़ का प्रतिरोध कर सकें।

एआईएमएसएस की अध्यक्षा **कॉमरेड छाया मुखर्जी** ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। दिल्ली की घटना की पृष्ठभूमि में जिसने पूरे देश को हिला कर रख दिया, उन्होंने जुएबाजी, नशाखोरी, अश्लीलता, पोर्नोग्राफी, शराब इत्यादि को संरक्षण देने मे केन्द्र तथा सरकारों की भूमिका का पर्दाफाश किया जो नौजवानों का नैतिक पतन कराने और उनके सांस्कृतिक स्तर को गिराने की जिम्मेदार हैं। इस स्थिति को बदलने के लिए पुरूषों और महिलाओं को शामिल कराते हुए देश भर में एक सशक्त सांस्कृतिक और सामाजिक आन्दोलन छेड़ने की जरूरत पर उन्होंने बल दिया। उन्होंने आगे कहा कि अग्रणी मार्क्सवादी चिन्तनकार और सर्वहारा के महान नेता कॉमरेड शिवदास घोष की शिक्षाओं के आधार पर

एआईएमएसएस के सम्मेलन में डॉ. मल्लिका साराभाई

महिलाओं की मुक्ति के लिए एआईएमएसएस देश भर में आन्दोलन संगठित कर रहा है। उन्होंने उम्मीद जताई कि प्रतिनिधिगण वापस जा कर नए जोश और शक्ति के साथ संगठन के निर्माण में जुट जाएंगे और महिलाओं पर अपराधों के खिलाफ और जायज मांगों को लेकर जनवादी आन्दोलन विकसित करेंगे।

प्रतिनिधि अधिवेशन
30 और 31 जनवरी, 2013

प्रतिनिधि अधिवेशन की शुरूआत में कॉमरेड छाया मुखर्जी द्वारा एआईएमएसएस का झण्डा फहराया गया और एआईएमएसएस के अखिल भारतीय नेताओं द्वारा शहीद वेदी पर माल्यार्पण किया गया। कॉमरेड छाया मुखर्जी की अध्यक्षता में गठित अध्यक्ष मण्डल ने तमाम कार्रवाइयों का संचालन किया। बहुत से योद्धा जो पिछले सम्मेलन के बाद गत 8 वर्षों के दौरान हमसे बिछुड़ गए उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की गई। पूरे हाऊस ने गहरी श्रद्धा के साथ कॉमरेड नीहार मुखर्जी को याद किया जिन्होंने 1976 से लेकर मृत्युपर्यंत एआईएमएसएस को गाइड किया। सम्मेलन ने दिल्ली में सामूहिक बलात्कार की शिकार 'निर्भया' को अपनी श्रद्धांजलि दी और 31 जनवरी को सभा को सम्बोधित भी किया गया और एआईएमएसएस कार्यकर्ताओं को दिशा-निर्देश प्रदान किए गए।

सम्मेलन के समापन सत्र को **एसयूसीआई(सी) के महासचिव कॉमरेड प्रभाष घोष** ने सम्बोधित किया और उन्होंने डेलिगेटों का आह्वान किया कि तमाम शोषणमूलक व्यवस्थाओं और पितृतन्त्र द्वारा उन पर लादे गए तमाम अन्यायों और भेदभावों का प्रतिकार करने की खातिर एक सशक्त आन्दोलन छेड़ने के लिए वे आगे आएं और एक समाजवादी समाज स्थापित करने के लिए आगे बढ़ें, केवल ऐसा समाज ही महिलाओं की बराबरी और मर्यादा की गारण्टी दे सकता है।

एआईएमएसएस की सैद्धान्तिक लाइन पर, डीपीआरके में समाजवाद का और अमेरिकी साम्राज्यवादियों के घृणित षड़यन्त्रों के खिलाफ उनके बहादुराना संघर्ष का समर्थन करने वाला एक प्रस्ताव तथा एआईएमएसएस द्वारा संचालित कई सफल आन्दोलनों का ब्यौरा देने वाली सांगठनिक रिपोर्ट को सर्वसम्मति से पारित किया गया। एक नई 72 सदस्यीय काऊंसिल चुनी गई जिसमें कॉमरेड छाया मुखर्जी अध्यक्ष और डॉ. एच.जी. जयालक्ष्मी महासचिव निर्वाचित हुईं।

(शेष पृष्ठ 4 पर)

विचारोत्तेजक सेमिनार:

1. साम्प्रदायिकता के खिलाफ महिलाएं

जस्टिस सुरेश होसबेट और कालीकट मैडिकल कॉलेज में गाइनोकॉलोजी की प्रोफेसर और एक रचनात्मक लेखिका के रूप में डॉक्टर खादिजा मुमताज ने इस विषय पर अपनी बात रखी। अन्य बातों के अलावा साम्प्रदायिकता के रक्तरंजित पहलुओं को, साम्प्रदायिक दंगे भड़काने में शासकों द्वारा निभाई जाने वाली भूमिका को उजागर किया और इस बुराई के खिलाफ महिलाओं के बहादुराना संघर्ष को रेखांकित किया। सेमिनार की अध्यक्षता एआईएमएसएस की उपाध्यक्ष डॉक्टर सुधा कामथ ने की।

2. सामाजिक प्रगति में महिलाएं

इस सेमिनार ने इस बात पर प्रकाश डाला कि किस प्रकार महिलाओं ने सामाजिक उत्पादन और सामाजिक प्रगति में विभिन्न तरीकों से योगदान दिया है, इसकी अध्यक्षता कॉमरेड छाया मुखर्जी ने की और रिसोर्स पर्सन्स थे केरल की शिक्षाविद और सामाजिक कार्यकर्ता डॉ. राधा, डॉ. निरुपमा बारगोंई और एआईडीवाईओ के अध्यक्ष डॉ. बी. आर. मंजुनाथ।

3.साम्राज्यवाद के खिलाफ महिलाएं

दुनिया भर में निरन्तर जारी साम्राज्यवादी आक्रमणों की पृष्ठभूमि में यह उपयुक्त था कि इस बुराई से लड़ने में महिलाओं द्वारा निभाई गई भूमिका को समर्पित एक सत्र किया जाए। सेमिनार की अध्यक्षता डॉ. एच.जी. जयालक्ष्मी ने की। चर्चा में अनेक प्रतिष्ठित वक्ताओं ने हिस्सा लिया जिनमें इण्टरनेशनल एक्शन सेण्टर, अमेरिका से सुश्री लीलानी डोवेल, सोशलिस्ट वुमेंस फोरम की महासचिव सुश्री प्रवीण अख्तर, बांग्लादेश से सुश्री जेनोतुल फिरदोस, ऑल नेपाल वूमेंस एसोसिएशन (रिवोल्यूशनरी) की संयोजक सुश्री सीता पोखरेल और लक्ष्मी पुन (रिवोल्युशनरी जर्नलिस्ट, नेपाल), एफ्रो-एशियन सोलिडैरिटी कमेटी, डीपीआरके से सुश्री रयुकुम रान और सुश्री री क्योंग जिम प्रमुख थी। सभी ने अपने अपने देशों में साम्राज्यवाद-विरोधी संघर्षों और इनमें महिलाओं की सक्रिय भागीदारी के बारे में चर्चा की। कॉमरेड माणिक मुखर्जी ने व्याख्या की कि किस प्रकार अमेरिका में 'वॉल स्ट्रीट दखल करो' आन्दोलन दिशाहीन हो गया और जारी नहीं रह सका क्योंकि यह सही नेतृत्व में संचालित नहीं था। इसके बाद विदेशों से आए प्रतिनिधियों

अखिल भारतीय महिला सम्मेलन

के साथ आदान-प्रदान का जीवंत सत्र हुआ।

विदेशों से बिरादराना प्रतिनिधियों के भाषणों का सारांश

सुश्री रियु कुम रान, एफ्रो-एशियन सोलिडरिटी कमेटी, डीपीआरके

सुश्री रियुकुम रान ने कहा कि क्योंकि महिलाओं को प्राथमिकता देने की योजना में डीपीआरके की उनकी सरकार ने उन्हें सुनिश्चित अधिकार प्रदान किए हैं और महिलाओं को उनके खुद का भाग्य विधाता बना दिया, बड़ी देख-भाल और सुरक्षा के साथ सक्रिय भागीदारी करने और समाज के लाभों का उपयोग करने की स्वतन्त्रता उन्हें प्राप्त है। लिंग समानता के कानून की घोषणा के बाद विगत 60 वर्ष के दौरान महिलाओं ने चुनने और चुने जाने के अधिकार के साथ राजनीतिक गतिविधियों में पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिला कर हिस्सा लिया है, सामाजिक-सांस्कृतिक जीवन के सभी क्षेत्रों में उचित स्थान हासिल किया है और प्रभावकारी ढंग से अपनी भूमिका निभाई है। उन्होंने न्याय के लिए भारतीय महिला आन्दोलन को अपना भरपूर समर्थन दिया।

सुश्री सीता पोखरेल-संयोजक, ऑल नेपाल वूमेंन्स एसोसिएशन (रिवोल्यूशनरी)

सुश्री सीता पोखरेल ने सराहना की और कहा कि महिलाओं की मुक्ति के लिए एआईएमएसएस का सतत संघर्ष भारत के तथा नेपाल सहित दुनिया के भी शोषित-पीड़ित लोगों के लिए बहुत बड़ी उम्मीद और प्रेरणा है। वे भी नेपाल में महिलाओं के खिलाफ होने वाली हिंसा के प्रतिवाद में सड़कों पर उतरी थी। उन्होंने कहा कि सामंतवादी सोच, पुरुष प्रधानता और विकृत पूँजीवादी संस्कृति महिलाओं के पिछड़ेपन के लिए मूल रूप से जिम्मेदार हैं।

सुश्री इलेना एवरेट, वर्कर्स वर्ल्ड पार्टी अमेरिका, का संदेश

सुश्री इलेना एवरेट महसूस करती हैं कि अमेरिका में महिलाओं के खिलाफ व्यवहार, पतन और हिंसा कई मायने में उसकी प्रति छाया है जिसका सामना दुनिया भर की महिलाएं कर रही हैं। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि अपने साझा तजुर्बों को निर्धारित करते हुए और मान्यता देते हुए वे समाजवाद के लिए अपने संघर्ष में और पितृतंत्र, कार्यस्थलों पर भेदभाव, आर्थिक असुरक्षा, महिला तस्करी और यौन हिंसा के खिलाफ संघर्ष में एक साथ मिलकर वृहद एकता कायम कर सकती हैं।

सुश्री लीलानी डोवेल, वर्कर्स वर्ल्ड पार्टी, अमेरिका

सुश्री लीलानी डोवेल के विचार थे कि उनके श्रम और उनके शरीरों को उपभोग की वस्तु में तब्दील करने के माध्यम से पूँजीवाद ने महिलाओं के दमन-उत्पीड़न और शोषण को तीव्र किया है। अमेरिका और अन्य साम्राज्यवादी देशों की नव-उदारवादी नीतियों ने दुनियाभर में महिलाओं को दिए जाने वाली मजूरी को न्यूनतम कर दिया है और उन्हें यौन हमलों और हत्या का शिकार बनाया जाता है। उन्होंने साम्राज्यवाद-पूँजीवाद के खिलाफ युद्ध छेड़ने का आह्वान किया।

सुश्री प्रवीण अख्तर, सोशलिस्ट वूमेन्स फोरम (एस डब्ल्यू एफ)

सुश्री प्रवीण अख्तर ने कहा कि एसडब्ल्यूएफ काम करता है वर्ग विभाजित पूँजीवादी व्यवस्था को ध्वस्त करने, भेदभाव मिटाने, पुरुष प्रधान मानसिकता द्वारा किए जाने वाले दमन-उत्पीड़न तथा विभिन्न धार्मिक कट्टरताओं के खिलाफ और शोषणमुक्त समाज बनाने का प्रयास कर रहा है। उन्होंने साऊथ एशिया के वाम प्रगतिशील और जनवादी महिला संगठनों के बीच वार्तालाप, सहयोग और विचारों के आदान-प्रदान को बढ़ाने का सुझाव दिया।

एक शानदार कार्यक्रम

29 जनवरी को अंतर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त नृत्यांगना डॉ. मल्लिका साराभाई ने भरतनाट्यम और कुचीपुड़ी के समायोजन के साथ दर्शकों को मंत्र मुग्ध कर दिया, पुरुष-प्रधान समाज द्वारा महिलाओं को अधीन किए जाने के खिलाफ संघर्ष का सामाजिक संदेश प्रभावकारी ढंग से प्रेसित किया गया। यक्षगान स्टाइल में महिलाओं द्वारा एक नृत्य-नाटिका 'प्रतिज्ञा पांचाली' प्रस्तुत की गई जिसमें द्रोपदी के पौराणिक चरित्र की नए रूप में व्याख्या की गई थी। जिसे कर्नाटक कला-दर्शनी टीम ने पेश किया था। डोलू कुनीता, एक लोकप्रिय नृत्य-नाटिका, कर्नाटक की लोक कला का एक रूप जो कौशल की विविधता और जटिलता का एक शानदार नजारा पेश करता है इसे कर्नाटक की महिला टीम द्वारा प्रस्तुत किया गया।

सही क्रान्तिकारी लाइन पर मुक्ति के लिए महिलाओं के संघर्ष को आगे ले जाने और तीव्र करने के दृढ़ संकल्प के साथ सम्मेलन का समापन हुआ।

खेत बचाओ जीवन बचाओ जन संघर्ष कमिटी का प्रदर्शन

पटना : वैशाली जिले के गोरौल प्रखंड अंतर्गत कन्हौली धनराज पंचायत के पानापुर के निकट चकसुलतान रामपुर राजधारी गांव में निर्माणाधीन एस्बेस्टस फैक्ट्री के खिलाफ संघर्षरत ग्रामीणों ने 16 जनवरी को पटना पहुंचकर मुख्यमंत्री के समक्ष प्रदर्शन किया। हजारों किसानों ने खेत बचाओ जीवन बचाओ जन संघर्ष कमिटी के बैनर तले गांधी मैदान से झंडे-बैनरों से सुसज्जित जुलूस निकाला, जो फ्रेजर रोड, डाक बंगला चौराहा, पटना जंक्शन गोलम्बर, न्यू मार्केट, मीठापुर होते हुए आर. ब्लॉक पहुंचा। पटना के जाने-माने बुद्धिजीवी, एस्बेस्टस विरोधी नागरिक मंच तथा वाम व समाजवादी/ लोकतांत्रिक संगठनों के नेताओं ने स्वास्थ्य, खेती और पर्यावरण के लिए घातक एस्बेस्टस फैक्ट्री के निर्माण के खिलाफ संघर्षरत ग्रामीणों के आंदोलन के प्रति एकजुटता प्रदर्शित करते हुए प्रदर्शन में भाग लिया। आर. ब्लॉक पर हुई सभा को कमिटी के संयोजक अजीत कुमार सिंह, अश्वेश्वर शर्मा, ललित कुमार घोष, इन्द्रदेव राय के अलावा जनमुक्ति संघर्ष वाहिनी के प्रियदर्शी, सीपीआई के पूर्व विधायक सत्य नारायण सिंह, सीपीआई (एम) के किसान सभा के अध्यक्ष ललन चौधरी, एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) के राज्य सचिव शिव शंकर, सीपीआई (एम-एल) लिबरेशन के केडी यादव और धीरेन्द्र झा, सीपीआई (एम-एल) के अरविन्द सिन्हा, फारवर्ड ब्लॉक के अमेरिका महतो, एमसीपीआई (यू)के विजय कुमार चौधरी, सीसीआई के सतीश कुमार, क्रांतिकारी फारवर्ड ब्लॉक के बालमुकुंद सिंह, मजदूर नेताओं, गजनफर नवाब (एआईटीयूसी), गणेश शंकर सिंह (सीआईटीयू), अरूण कुमार सिंह (एआईयूटीयूसी), नन्द किशोर सिंह (एआईएफटीयू-न्यू),, एनएपीएम की कामायनी, महेन्द्र, आशीष तथा टॉक्सिक वाच एलाएंस के गोपाल कृष्ण आदि ने ग्रामीणों के संघर्ष को समर्थन करते हुए सभा को संबोधित किया।

वक्ताओं ने कहा कि यूएएल कम्पनी ने गांव वालों को यह बताकर जमीन ली थी कि दवा का कारखाना लगाया जायेगा। साथ ही कंपनी ने केन्द्रीय पर्यावरण मंत्रालय को पर्यावरणीय मंजूरी के लिए जो एनवायरमेन्ट इम्पैक्ट असैसमेंन्ट (ईआईए) रिपोर्ट सौंपी, उसमें भी गलतबयानी कर मंत्रालय को यह कह कर गुमराह किया कि प्रस्तावित एस्बेस्टस कारखाने की जमीन 'बंजर' है। जबकि सच्चाई यह है कि कारखाना घनी आबादी के बीच उपजाऊ बहुफसली जमीन पर बनाया जा रहा है।

सभी वक्ताओं ने सरकार से मांग की कि अविलम्ब एस्बेस्टस कारखाने के निर्माण पर स्थायी रोक लगायी जाय तथा आंदोलनकारियों पर से फर्जी मुकदमों को तत्काल निरस्त किया जाय।

छात्राओं की सुरक्षा की मांग को लेकर उपायुक्त को सौंपा ज्ञापन

हजारीबाग : 8 फरवरी को यहाँ एआईडीएसओ द्वारा आठ सूत्री माँगों को लेकर उपायुक्त कार्यालय के समक्ष प्रदर्शन व घेराव किया गया। प्रदर्शन केबी महिला महाविद्यालय से शुरू होकर वंशीलाल चौक, झंडा चौक, अन्नदा चौक होते हुए उपायुक्त कार्यालय पहुँचा। शिक्षण संस्थानों के समक्ष महिला सुरक्षा दस्ते तैनात करने, कोचिंग क्लासेस के समय गस्त बढ़ाने, मनचलों पर सख्त कार्रवाई करने, अश्लील साहित्य, सिनेमा, पोस्टरों व होर्डिंगों, शराबखोरी, नशाखोरी, लॉटरी पर रोक लगाने, महिला प्रताड़ना, छेड़छाड़, दहेज आदि मामलों में तत्काल पुलिस कारवाई करने की मांग उपायुक्त से की गई जिन पर कारवाई का भरोसा उन्होंने दिया। प्रदर्शन का नेतृत्व जिला सचिव आशीष कुमार, जिला उपाध्यक्ष गोलु देव कुमार, जीवन यादव, पूजा कुमारी, मो. फजल, राजन कुमार, रानी कुमारी, रोहित कुमार, कर्मवीर यादव ने किया।

एआईयूटीयूसी.....

(पृष्ठ 2 का शेष)

दूषित करता रहेगा। यह हमें समझना चाहिए।

कॉमरेड लेनिन ने हमे ट्रेड यूनियन आन्दोलन को साम्यवाद की पाठशाला के रूप में संगठित करने, ट्रेड यूनियन आन्दोलन को समाजवाद के लिए संघर्ष के रूप में विकसित करने की सीख दी थी। उन्होंने हमें बताया कि क्रान्तिकारी राजनीति के बिना ट्रेड यूनियनवाद मूल रूप से एक बुर्जुआ राजनीति है। और इस बात की बहुत बड़ी जरूरत है कि ट्रेड यूनियन आन्दोलन को एक क्रान्तिकारी आन्दोलन के रूप में विकसित किया जाए। यह काम ट्रेड यूनियन आन्दोलन के क्रान्तिकारी नेतृत्व का है। यह एक बहुत मुश्किल काम है। राजनैतिक तौर से असचेत मजदूर अपनी आर्थिक समस्याओं को समझते हैं। वे आर्थिक माँगों में रुचि लेंगे और इन मुद्दों पर प्रत्युत्तर भी देंगे लेकिन स्वत:स्फूर्त ढंग से वे राजनैतिक संघर्ष की जरूरत को नहीं समझते हैं। इस नाजुक घड़ी में यह कार्य और भी महत्वपूर्ण हो गया है।

कॉमरेडो, लेनिन ने हमें यह भी सीख दी कि एक धारणा के तौर पर वैज्ञानिक समाजवाद का विचार बाहर से आता है, यह धारणा, यह सिद्धान्त, यह विचार स्वत:स्फूर्त अपने आप ट्रेड यूनियन आन्दोलन के अन्दर से नहीं आता है। ट्रेड यूनियन आन्दोलन अपने आप ज्यादा हुआ तो कुछ आर्थिक मांगें हासिल कर सकता है, ज्यादा हुआ तो कुछ ट्रेड यूनियन कानूनों के लिए लड़ सकता है, इसके परे कुछ नहीं कर सकता। वैज्ञानिक समाजवाद के लिए विज्ञान का अध्ययन जरूरी है। विज्ञान की विभिन्न शाखाओं के विशेष नियमों को संयोजित, समन्वित सामान्यीकृत करते हुए द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद समाज का क्रान्तिकारी परिवर्तन लाने के एक मार्गदर्शक दर्शन के तौर पर विज्ञानों के विज्ञान के रूप में विकसित हुआ है। द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद की सही समझ हासिल करने और मजदूर वर्ग को इस अजेय हथियार से लैस करने के लिए वर्गच्युत क्रान्तिकारी बुद्धिजीवियों के दस्ते की जरूरत होती है। वैज्ञानिक समाजवाद समझने के लिए दार्शनिक, सामाजिक, ऐतिहासिक और आर्थिक सिद्धान्तों के अध्ययन, द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद के विज्ञान के अध्ययन की जरूरत होती है और यही है अगुआ दस्ते की भूमिका। क्योंकि यह क्रान्तिकारी चेतना ट्रेड यूनियन आन्दोलन के अन्दर से ही स्वत: पैदा नहीं होती है इसलिए इसे ट्रेड यूनियन आन्दोलन के बाहर से लाना होता है। वे ही यह काम कर सकते हैं जो न केवल आर्थिक बल्कि राजनैतिक व सांस्कृतिक तौर पर भी संपत्तिशाली वर्ग से अपना नाता तोड़ने में सक्षम हुए हैं, सामाजिक परिवर्तन के सही रास्ते को ढूँढ़ने के लिए अपनी समझदारी की क्षमता और प्रतिभा को काम में लगाने में सक्षम हुए हैं और इस प्रकार सही वैज्ञानिक दृष्टिकोण व रुख के जरिये वैज्ञानिक समाजवाद की सही धारणा से लैस हैं। एक बार जब वे इस सत्य को समझने में सक्षम हो जाते हैं तो उन्हें क्रान्तिकारी मजदूर आन्दोलन विकसित करने के लिए मजदूर वर्ग के हरावल दस्ते तक यह सत्य संचारित करने, उन्हें बौद्धिक रूप से विकसित करने की जरूरत पड़ेगी। इसलिए यह बहुत ही कठिन कार्य है। हमारे ट्रेड यूनियन नेताओं को इसे समझना चाहिए। हालांकि एक यूनियन बनाना बहुत कठिन है। फिर भी यदि आप यूनियन बना लें और कुछ आर्थिक मांगें हासिल कर लें और इसके जरिए चाहे आप मजदूर वर्ग के अन्दर लोकप्रिय भी बन जाएं लेकिन केवल इसी से काम नहीं बनेगा। सवाल यह है कि हम मार्क्सवाद-लेनिनवाद, कॉमरेड शिवदास घोष विचारधारा के आधार पर मजदूर वर्ग को शिक्षित करने में सक्षम हुए हैं या नहीं। इसी कसौटी पर सफलता को मापा जाना चाहिए। हमें इसी प्रकार समझना चाहिए।

पूँजीवादी भूमण्डलीकरण का हमला

भूमण्डलीकरण के इस दौर में, साम्राज्यवाद के इस युग में यह बहुत मुश्किल काम है। अभूतपूर्व बाजार संकट से रूबरू बहुराष्ट्रीय कम्पनियों ने यह नारा देकर भूमण्डलीकरण की यह बुरी स्कीम चालू की थी कि राष्ट्रवाद, राष्ट्रीय सीमाई बैरियर और राष्ट्रीय सम्प्रभुता की धारणाएं अब पुरानी पड़ गई हैं। आज जो प्रासंगिक और वैध हैं वे हैं बिना किसी ट्रेड बैरियर के एक भूमण्डलीय बाजार की धारणाएं। यूएनओ, विश्व बैंक, आईएमएफ, डब्ल्यूटीओ जैसी विश्व पूँजीवाद-साम्राज्यवाद की तमाम भूमण्डलीय संस्थाओं और साथ ही साम्राज्यवादी-पूँजीवादी राज्यों को भी भूमण्डलीकरण के इस नव-विषदंतयुक्त सिद्धांत का ताबेदार बना दिया गया है। पूँजीवादी भूमण्डलीकरण के पैरोकारों को लोकतंत्र, आजादी, मानवाधिकारों, मानव हित, नीति-नैतिकता, मूल्यबोधों या किसी सत्य या मानवीय तरीके की जरा भी परवाह नहीं है। उनका एकमात्र ध्येय है मानव रूपी कच्चे माल के तौर पर मजदूरों का शोषण करके अधिकतम मुनाफा कमाना, उनके खून का आखिरी कतरा तक चूस लेना और उन्हें निर्मम दमन की चक्की में पीस डालना। पूँजीवाद भूमण्डलीय हो गया है, उत्पादन भूमण्डलीय है, ऐसे ही मजदूर वर्ग भी भूमण्डलीय है। पूँजीपति-साम्राज्यवादी डींग हांकते हैं कि वे विज्ञान व तकनीकी प्रगति का इस्तेमाल करते हुए अंतरिक्ष में खोज कर रहे हैं लेकिन वे तमाम पुराने, दकियानुसी, सामन्ती विचारों, आध्यात्मवाद, भाववाद, जीवन के प्रति धार्मिकता के पुनरुत्थान को बढ़ावा और उकसावा दे रहे हैं ताकि उन्हें अन्धकार के गर्त में डाले रखा जा सके, भ्रमित किया जा सके, उनमें फूट के बीज बोये जा सकें। उन्हें यह विश्वास करने को कहा जा रहा है कि उन्होंने पूर्वजन्म में पाप किये थे इसलिए वे गरीबी में पड़े सड़ रहे हैं। सर्वशक्तिमान भगवान ही है जो सब कुछ निर्धारित करता है, सब कुछ पूर्व निर्धारित है। सब भगवान की मर्जी है। यदि आप इसका विरोध करेंगे तो आप भगवान के आदेश, भगवान की मर्जी के खिलाफ काम करेंगे और इस तरह फिर पाप कर बैठेंगे। एक तरफ हमारे देश में गीता, रामायण, महाभारत, कुरान, बाईबल जैसे धार्मिक ग्रंथों व महाकाव्यों के उपदेशों का पाठ पढ़ाने को बढावा दिया जा रहा है और धार्मिकता, जातिवाद, साम्प्रदायिकता और क्षेत्रीय उन्माद को भड़काया जा रहा है, जबकि दूसरी तरफ सड़ी-गली पूँजीवादी-साम्राज्यवादी संस्कृति, ओछी आत्म-केन्द्रित मानसिकता, व्यक्तिवाद, पोर्नोग्राफी, बेहूदगी, जीवन के प्रति किसी भी नैतिक मूल्यों से विहीन एक नजरिये का व्यापक पैमाने पर हमला है। देखिये आर.एस.एस. के मोहन भागवत व उन सरीखे महानुभाव महिलाओं पर खौफनाक ढंग से बढ़ते अपराधों के बारे में कैसी टिप्पणी कर रहे हैं। वे नसीयत दे रहे हैं कि महिलाएं लक्ष्मण रेखा को पार न करें। आप सब रामायण की कहानी जानते हैं जिसमें सीता ने जब लक्ष्मण रेखा पार की तो रावण उन्हे उठा ले गया था। दूससे शब्दों में, वे महिलाओं से कह रहे हैं उन्हें बस रसोई घर और शयन कक्ष तक ही अपने को सीमित रखना चाहिए जबकि रावण जैसे बलात्कारी और अपराधी बेरोकटोक खुले घूमते रहेंगे। यह है भारत। यही है देश की मुख्य विपक्षी पार्टी को सैद्धान्तिक रूप से गाइड करने वालों का स्टैण्ड।

मजदूरों में राजनैतिक चेतना का उन्मेष होना चाहिए

अधिकतर मजदूरों पर अभी भी ऐसे नेताओं का प्रभाव है। इसलिए मजदूरों को ऐसे विनाशकारी दार्शनिक विचारों के प्रभाव से मुक्त करना और मार्क्सवाद-लेनिनवाद-शिवदास घोष चिन्तनधारा के दर्शन को स्वीकार करने और पूँजीवाद के खिलाफ उठ खड़े होने के लिए समझना हमारा काम है। यह बहुत गंभीर, मुश्किल और कष्टसाध्य संघर्ष का मामला है। ''पूँजीवाद मुर्दाबाद'', ''समाजवाद का निर्माण करो'' –महज ये नारे लगाने से ही काम नहीं बनेगा। मजदूर को समझना होगा कि पूँजीवाद क्या है, साम्राज्यवाद क्या है, यह जानलेवा शोषण क्यों है, कैसे वे शोषित हैं। उन्हें शिक्षित करना होगा कि यह वर्ग विभाजन और शोषण शाश्वत नहीं है, कि पहले मानव समाज वर्गहीन था, फिर कुछ निश्चित ऐतिहासिक कारणों की बदौलत समाज वर्ग विभाजित हुआ। अटल सामाजिक नियम का अनुसरण करते हुए, पहले दास समाज आया, फिर सामंतवाद आया और फिर पूँजीवाद आया। और उसी नियम पर चलते हुए पहले समाजवाद और फिर साम्यवाद आना निश्चित है। ये बातें उस भाषा में सिखानी हैं जिसमें मजदूर समझ सकें और पक्का यकीन कर लें।

मार्क्स ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ *पूँजी* में दिखाया था कि पूँजी के दो भाग हैं -स्थिर पूँजी और चलायमान पूँजी। चलायमान पूँजी द्वारा पूँजीपति श्रम शक्ति खरीदते हैं। श्रमशक्ति माल उत्पादन में इस्तेमाल की जाती है। मूल्य न चुकाई गई श्रम शक्ति से अतिरिक्त मूल्य या मुनाफा पैदा होता है। श्रम शक्ति के मूल्य की गणना मजदूर और उसके परिवार को जिन्दा रखने पर आने वाली लागत से की जाती है। मार्क्स के समय बेरोजगारी इतनी ज्यादा नहीं थी। उस समय मजदूर उस वेतन के लिए मोलभाव करने की स्थिति में था जो उसके खुद के और उसके परिवार के गुजारे के लिए जरूरी था। लेकिन आज जब बेरोजगारी लगातार बढ़ती जा रही है, कोई भी मोलभाव करने की स्थिति में नहीं है। वेतन के रूप में जो कुछ भी मामूली राशि दी जाती है उसी पर वे काम करने को बाध्य हैं। अत: आवश्यकता-आधारित वेतन अब एक खोखला शब्द मात्र है। भयंकरतम शोषण-दमन जारी है। ऐसे हालात में मजदूरों को महसूस करना चाहिए कि आवश्यकता-आधारित वेतन की उनकी जायज और न्यायसंगत मांग पूँजीवाद को उखाड़ फेंकने के लिए संघर्ष चलाये बिना हासिल नहीं की जा सकती। मजदूरों को दार्शनिक, सैद्धान्तिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक तौर पर शिक्षित किया जाना चाहिए। फैक्ट्रियों में मार्क्सवाद-लेनिनवाद-शिवदास घोष चिन्तनधारा की चर्चा उस भाषा में तथा उस तरीके से की जानी चाहिए जिसे वे समझ सकें। मैं फिर कहता हूँ कि यह बहुत मुश्किल काम है। मजदूरों की असंख्य क्लासें और स्कूल आयोजित करने चाहिएं। साथ ही, अनौपचारिक चर्चाएं भी चलती रहनी चाहिएं, राष्ट्रीय और अन्तरराष्ट्रीय परिस्थितियों पर, बुर्जुआ ट्रेड यूनियनवाद, सोशल डेमोक्रेटिक ट्रेड यूनियनवाद और सर्वहारा ट्रेड यूनियनवाद में फर्क क्या है, जीवन के हर क्षेत्र में मजदूर संगठित क्यों नहीं हैं इस पर चर्चा होनी चाहिए। आप महज कुछ शब्द बोल कर, हिला कर रख देने वाले अच्छे जज्बाती भाषण देकर या कुछ नारे बुलंद करके ही राजनैतिक शिक्षा नहीं दे सकते हैं। सतत सैद्धान्तिक चर्चाएं जरूरी हैं। यह सैद्धान्तिक संघर्ष निरन्तर कड़े परिश्रम और बड़े धैर्य के साथ कष्टसाध्य प्रयासों की मांग करता है। मजदूर जब एक संघर्ष के बीच होते हैं तब कुर्बानी की एक भावना विकसित होती है। उस समय उनमें सुनने का भी एक मन बनता है। वही उचित शिक्षा देने का भी समय होता है। इसलिए जब आर्थिक-मांगों पर भी आन्दोलन होता है, यही वह समय है जब अल्पविकसित रूप में राजनीतिक चेतना की चिंगारी मजदूरों के दिमाग में कौंधती है। यही वह समय होता है जब हम उन्हें शिक्षित कर सकते हैं। औपचारिक, अनौपचारिक दोनों तरीकों से यह शिक्षा निरन्तर जारी रहनी चाहिए। हमें मजदूरों के बीच वैकल्पिक स्वस्थ संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए सांस्कृतिक इकाइयों, संगीत मण्डलियों, नाटक मण्डलियों की भी जरूरत है। जैसे आपने कल रात यहाँ मेजबान प्रदेश के युवा साथियों द्वारा प्रस्तुत किये गये ऐसे ही एक नाटक का लुत्फ उठाया। मजदूर आन्दोलन खड़े करते-करते आपको उन्हें दिखाना होगा कि आन्दोलन का तात्कालिक व अन्तिम लक्ष्य क्या है, दोनों को कैसे अन्तरसंबंधित किया जा सकता है। मजदूरों को सिखाना होगा कि हर दमन, शोषण और अन्याय के खिलाफ संघर्ष करना चाहिए। वे संघर्ष में नाकाम हो सकते हैं, फिर भी उन्हें लड़ना होगा, आत्मसम्मान व मर्यादा रखने वाला होने के नाते सही मायने में इन्सान की तरह किसी भी अन्याय का विरोध करना होगा। इस संघर्ष में वे मर भी सकते हैं, लेकिन वे इज्जत से मरेंगे। लेकिन अन्तत: उनकी लड़ाई बेकार नही जाएगी। जो मजदूर 8 घण्टे के कार्यदिवस के लिए लड़े, जो मजदूर ट्रेड यूनियन अधिकारों के लिए लड़े, जो मजदूर पेरिस कम्यून के लिए लड़े–वे सब अपने जीवनकाल में अपनी कोशिशों में नाकाम हुए। लेकिन अन्तत: उन लड़ाइयों ने ही भावी जीतों का मार्ग प्रशस्त किया।

हमारे ट्रेड यूनियन कार्यकर्ताओं को किसी आन्दोलन को छेड़ने से पहले दीर्घकालीन संघर्ष संचालन के परिपूरक वैचारिक संघर्ष, संघर्ष कमेटियों के गठन और स्वयंसेवकों की भर्ती पर जोर देना नहीं भूलना चाहिए। देश-विदेश में चल रहे संघर्षों से मजदूरों को वाकिफ रखना चाहिए ताकि वे उन संघर्षों से सीख सकें। संघर्ष के भंवर में, साधारण मजदूर भी सक्रिय हो जाते हैं और जुझारू भावना दर्शाते हैं जो अन्यथा सामाजिक समस्याओं के प्रति बेपरवाह और राजनीति के प्रति उदासीन रहते हैं। उनमें से एक हिस्सा साहस, हठ, शौर्य, दृढ़ निश्चय और सब कुछ कुर्बान कर देने का जज्बा दिखाते हैं। इस बाद वाली कोटि के जो हैं उनकी पहचान करें और तत्परता से उनका नाम अपने होनहार संगठकों की सूची में लिख लें। आपको हर स्तर पर बॉडी फंक्शनिंग को सुनिश्चित करना होगा। यह मत भूलें कि व्यक्तिगत निर्णय लेने की आदत सर्वहारा संस्कृति के लिए अहितकर एक बुर्जुआ बुराई है। यही काफी नहीं है कि आपका व्यक्तिगत निर्णय सही है। निष्कर्ष से पहले उस फैसले की सामूहिक तौर पर जांच और पुष्टि कर लेना भी उतना ही महत्वपूर्ण है। कॉमरेड शिवदास घोष की सीख को याद करें कि हम अपने व्यक्तिगत सम्पत्ति बोध और व्यक्तिगत सम्पत्तिजनित मानसिक ग्रंथी, सम्पत्ति आदत और व्यक्तिवाद खत्म किये बिना हम पूँजीवादी व्यक्तिगत मालिकाने का खात्मा

(शेष पृष्ठ 6 पर)

एआईयूटीयूसी.....

(पृष्ठ 5 का शेष)

नहीं कर सकते।

हमारे ट्रेड यूनियन कार्यकर्ताओं को जानना होगा कि पैरिस कम्यून, रूसी क्रान्ति और चीनी क्रान्ति के दौरान मजदूर कैसे लड़े थे। रूसी क्रान्ति के दौरान मजदूर अपनी फैक्ट्रियों में, बैरकों में लड़े थे। हमारे ट्रेड यूनियन नेताओं को भी उसी प्रकार सोचना चाहिए। निश्चित ही उन्हें प्रचलित श्रम कानून इत्यादि जानने चाहिएं, यह तो न्यूनतम जरूरत है लेकिन सिर्फ उसी से काम नहीं बनेगा। मैं क्रान्तिकारी पार्टी से सम्बन्ध रखता हूँ केवल इसी से काम नहीं बनेगा। मजदूर वर्ग के अति पिछड़े हिस्से तक मार्क्सवाद–लेनिनवाद–शिवदास घोष चिंतनधारा की अत्यंत विकसित समझदारी सही तरह से पहुंचाना है ट्रेड यूनियन नेताओं का काम। हमें इसके लिए प्रयास करना चाहिए। लोग उत्पीड़न पर उत्पीड़न झेल रहे हैं, पुनः वे नेतृत्व के बिना फट पड़ेंगे, यह सिलसिला जारी रहेगा।

मार्क्सवाद का विज्ञान एक जांचा–परखा सत्य है

अगला जो बिन्दु हमें मजदूरों को समझाना है वह है मार्क्सवाद–लेनिनवाद–शिवदास घोष चिंतनधारा ने मजदूर वर्ग की मुक्ति के लिए जो रास्ता निर्धारित किया है वह सिर्फ सिद्धांत तक ही सीमित नहीं है बल्कि यह व्यवहारिक तौर पर भी सिद्ध हो गया है। सोवियत समाजवाद और चीनी क्रान्ति की उपलब्धियाँ इसके मुँह बोलते सबूत हैं। हमारे देश के मजदूरों को जानना चाहिए कि सोवियत समाजवाद ने रूसी मजदूरों को क्या कुछ प्रदान किया। क्यों बर्नार्ड शॉ, रोमाँ रोलाँ, रवीन्द्रनाथ टैगोर, नेताजी सुभाष, आइन्स्टाइन व अन्य महान हस्तियों ने, जो कम्युनिस्ट नहीं थे समाजवाद का अभिनन्दन किया, क्यों वे लेनिन, स्टालिन की इज्जत करते थे। यह सच है कि प्रतिक्रान्ति के जरिये सोवियत रूस और चीन में पूँजीवाद पुनर्स्थापित हो गया। जब कोई भी इस तकलीफदेह धक्के का कारण जान नहीं पाया तब ये कॉमरेड शिवदास घोष ही थे जिन्होंने मार्क्सवाद की शिक्षाओं के आधार पर इसका उत्तर दिया। यह सभा इस सब पर विस्तृत चर्चा के लिए नहीं है। लेकिन एक बात मैं आपको बताना चाहता हूँ कि कोई भी नया विचार, नई विचारधारा अल्प काल में पूर्ण सफलता प्राप्त नहीं कर सकती है, यहाँ तक कि जिन्होंने धार्मिक विचारों का प्रचार किया, जिन्हें भगवान के दूत समझा जाता था, जिन्होंने हिन्दूवाद, ईसाइयत, इस्लाम का प्रचार किया वे भी अल्प समय में सफल नहीं हो सके थे। किसी भी धर्म को स्वीकृति हासिल करने में सैकड़ों सैकड़ों साल लगे थे। जय और पराजय का एक सिलसिला चला था, उन्हें इस दिशा में संघर्षरत रहना पड़ा। यदि हम पुनर्जागरण से शुरू करें तो बुर्जुआ जनतांत्रिक क्रान्ति को अंतिम विजय हासिल करने में 350 से अधिक वर्ष लगे थे। इसके मुकाबले समाजवाद तो सिर्फ लगभग 70 वर्ष तक ही रहा। धर्म ने शोषण का खात्मा नहीं किया। इसने सिर्फ गुलाम व्यवस्था की जगह सांमन्ती व्यवस्था को स्थापित किया, यानी एक शोषण की जगह दूसरा शोषण स्थापित किया। इसी प्रकार बुर्जुआ जनतांत्रिक क्रान्ति ने सामंती शोषण की जगह पूँजीवादी शोषण स्थापित किया। लेकिन समाजवादी क्रान्ति वह क्रान्ति है जो सदा सदा के लिए शोषण का खात्मा कर देती है। गुलाम व्यवस्था से शुरू कर पूँजीवाद तक मानव द्वारा मानव के हजारों सालों के शोषण को खत्म करने की क्रान्ति है यह। इसकी तुलना में समाजवाद के 70 वर्ष बहुत ही अल्प अवधि है। हम जानते हैं कि मजदूर वर्ग सोवियत यूनियन में राजनैनिक तौर से विजयी हुआ था, अर्थव्यवस्था के क्षेत्र में भी पूँजीपति वर्ग रूस में लगभग निर्मूल हो जाने के कगार पर था। लेकिन ऊपरी ढाँचे में, सिद्धान्त और विचारधारा के क्षेत्र में पूँजीवाद को पूरी तरह निर्मूल करना सम्भव नहीं था। जैसा कि लेनिन ने बताया है कि क्रान्ति सफल कर लेना बहुत आसान है लेकिन सफलता के बाद क्रान्ति की रक्षा कर पाना बहुत ही कठिन कार्य है। उन्होंने कहा था कि क्रान्ति के बाद दुश्मन की ताकत दस गुना, सौ गुना बढ़ जाती है। स्टालिन ने अपने जीवन के अंतिम पड़ाव में सीपीएसयू की 19वीं कांग्रेस में सिद्धान्त के क्षेत्र में बुर्जुआ वर्ग के हमले के इस खतरे के बारे में आगाह किया था और इस मुद्दे पर बहुत ही गम्भीर बिन्दु उठाए थे। कॉमरेड शिवदास घोष ने बताया था कि ऊपरि ढांचे के क्षेत्र में बुर्जुआ विचारों और बुर्जुआ संस्कृति के हमले तथा बुर्जुआ व्यक्तिवाद की आफत से सोवियत यूनियन रूबरू हुआ जिससे संशोधनवाद आया, जिसमें सीपीएसयू नेतृत्व आकण्ठ डूब गया। संशोधनवाद द्वारा साम्राज्यवादी ताकतों से सहायता और समर्थन प्राप्त कर प्रतिक्रान्ति का षड़यन्त्र रचा गया। निस्संदेह यह बहुत ही वेदनादायक रहा है।

पैरिस कम्यून की सफलता कुछ महीने ही टिक पाई। इसने मार्क्स और एंगेल्स के लिए महत्वपूर्ण सीखें प्रदान की। सोवियत समाजवाद 70 वर्ष तक रहा, इसकी विफलता ने हमें महत्वपूर्ण सीखें प्रदान की हैं। इन बिन्दुओं को भी हमें जानना चाहिए। रूस के बाद पूर्वी यूरोप के अन्य देशों और हाल ही में चीन में समाजवाद के ढह जाने से शोषित जनता के बीच भी गहरी हताशा पैदा हुई है। पूँजीपतियों द्वारा लगातार किये जाने वाले इस प्रचार से कि समाजवाद फेल हो गया है, यह हताशा और भी बढ़ गई है। इस भ्रम को दूर करने के लिए राजनैतिक शिक्षा जरूरी है। मजदूरों को सैद्धान्तिक तौर पर खुद को लैस करना चाहिए, अपना स्तर ऊपर उठाना चाहिए। मजदूरों को यह सिखाया जाना चाहिए कि यदि वे अपने खुद के कार्यस्थल, डिपार्टमैण्ट या फैक्ट्री तक ही महदूद रहेंगे तो यह उनके दृष्टिकोण को संकुचित कर देगा और यह मजदूर वर्ग की एकता के वांछित विकास को बाधित कर देगा। एक विशेष उद्योग के मजदूरों को व्यापक नजरिया विकसित करना चाहिए, मजदूरों को अन्य उद्योगों और मेहनतकशों के दूसरे–दूसरे तबकों से अपना भाईचारा विकसित करना चाहिए। स्टील फैक्ट्रियों के मजदूरों को कपड़ा उद्योगों के मजदूरों के लिए लड़ने की खातिर तैयार रहना चाहिए। भारतीय मजदूरों को यूरोप के मजदूरों की खातिर लड़ने के लिए तैयार रहना चाहिए। यह भावना उनमें विकसित की जानी चाहिए। बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ जिन्होंने भूमण्डलीकरण की स्कीम का षड़यन्त्र रचा वे मजदूरों को बाँट रही हैं, अपने संकीर्ण वर्ग स्वार्थ को आगे बढ़ाने के लिए पूँजीपति वर्ग और बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ अंधराष्ट्रवाद और तरह तरह के फूटपरस्त रुझानों जैसे उग्र राष्ट्रवाद, नस्लवाद, क्षेत्रवाद, साम्प्रदायिकता, जातिवाद, प्रजातीय दंगे आदि भड़का रही हैं। इस नापाक साजिश को नाकाम करने के लिए इन तमाम घातक प्रभावों के खिलाफ संघर्ष को रोजमर्रा के आर्थिक और राजनैतिक संघर्षों के साथ मिला देना है। यह समय की अत्यंत महत्वपूर्ण मांग है।

कॉमरेडो, आप जानते हैं कि कॉमरेड शिवदास घोष ने दिखाया था कि ऐतिहासिक कारणों से भारत का वंचित, शोषित मजदूर वर्ग तीन श्रेणियों में बंटा हुआ है और यहाँ मजदूर वर्ग संघर्षों को विकसित करते समय इस बात का ध्यान रखना निहायत जरूरी है। आपको याद दिलाने के लिए मैं उनके लेख से प्रासंगिक अंश पढ़ कर सुनाता हूँ: ''हमारे देश में भी मजदूर वर्ग में तीन हिस्से हैं। एक हिस्सा वह है जिसका आज भी ग्रामीण किसान–जीवन से पूरी तरह अलगाव नहीं हुआ है। मजदूरों का यह हिस्सा मजदूर आंदोलन में देहाती–जीवन के तरह–तरह के कुसंस्कार, अंधविश्वास, धर्मान्धता, कठमुल्लापन और गंवारपन इत्यादि को लाता रहता है। दूसरा हिस्सा वह है जो लोग आर्थिक दबाव के कारण निम्न मध्यम वर्ग से धीरे–धीरे झुग्गीवासी या मजदूर वर्ग में परिणत हो जाने के बावजूद विचारगत और रुचिगत दृष्टि से मध्यमवर्गीय 'बाबू समाज' से इनका सम्पर्क आज भी एकबारगी खत्म नहीं हुआ है। मजदूर वर्ग का यही हिस्सा मजदूर आंदोलन में पेटी बुर्जुआ भावविलासिता और ढुलमुलपन, व्यक्तिगत सुविधावाद, आत्म केंद्रीयता, व्यक्तिवाद, उदारवाद, अर्थवाद और हर तरह की अवसरवादी मानसिकता को लाता रहता है। और अंतिम तीसरा हिस्सा वह है जिसका नाता शहर के मध्यमवर्गीय बाबू–समाज और ग्रामीण किसान–समाज से एकबारगी टूट चुका है। हमारे देश में संख्या की दृष्टि से कम होने के बावजूद सर्वहारा वर्ग में यही सबसे क्रांतिकारी हिस्सा है। ये लोग ही सबसे ज्यादा दुस्साहसी (Desperate) हैं। लेकिन यह याद रखना होगा कि जब तक ये लोग यथार्थ वर्ग चेतना से लैस नहीं हो जाते, वर्ग सचेत नहीं हो जाते इनकी यह निराशोन्तता उद्देश्यहीन है और बुर्जुआ व्यक्तिवाद जो आज समाज में निकृष्ट स्तर में पहुँच चुका है, उसका प्रभाव भी इनमें बहुत ज्यादा मौजूद है। इन तीन अलग–अलग मानसिकताओं का आपसी द्वंद्व ही मजदूर वर्ग का अंदरूनी द्वंद्व है।''☆

कॉमरेड शिवदास घोष की इस महत्वपूर्ण शिक्षा को हमें ठीक से समझना चाहिए और जब हम मजदूर वर्ग के अन्दर काम कर रहे हों तो हमें इन तीन रुझानों से लड़ना होगा जो मजदूरों के बीच क्रान्तिकारी आन्दोलन को बाधित करते हैं। इन रुझानों का मुकाबला किये बिना आप कॉमरेड शिवदास घोष द्वारा परिभाषित सर्वहारा संस्कृति को हासिल नहीं कर सकते हैं। जैसा कि मार्क्स ने बताया है मजदूर दुनिया को तब तक नहीं बदल सकते जब तक कि वे पहले खुद को न बदल डालें। मजदूर वर्ग अलग–थलग नहीं है। यह बुर्जुआ वातावरण से बुर्जुआ संस्कृति से, बुर्जुआ दृष्टिकोण से घिरा हुआ है। ये सब मजदूर वर्ग को भ्रष्ट कर रहे हैं। व्यक्तिवाद, अवसरवाद, स्वार्थपरता इत्यादि बुरे विचारों से उन्हें निरंतर दूषित करते रहते हैं। मार्क्सवाद–लेनिनवाद–शिवदास घोष चिंतनधारा की शिक्षाओं के आधार पर हमें इन सबको दूर करना है। यह समय की सबसे जरूरी मांग है। मजदूरों को पूँजीपतियों के कुचक्रों और षडयंत्रों से सावधान रहना चाहिए। वर्ग सचेत मजदूरों को यह समझना चाहिए कि किन चालबाजियों, किन कपटपूर्ण नारों के जरिए ये बुर्जुआ और सोशल डैमोक्रेटिक नेतागण जनता और मजदूरों को गुमराह कर रहे हैं। उन्हें पेटी–बुर्जुआ और मध्यम वर्ग की आर्थिक सामाजिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि को समझना चाहिए–वर्ग दृष्टिकोण यह मांग करता है।

मार्क्सवाद–लेनिनवाद–शिवदास घोष चिन्तनधारा के छात्र होने के नाते हमें यह समझना चाहिए कि जीत हासिल करना इतना आसान नहीं है। सर्वोच्च बलिदान जरूरी है। बड़ी–बड़ी बाधाएं पार करनी पड़ेंगी। एक कष्टसाध्य दीर्घस्थाई संघर्ष जरूरी है। क्रान्ति की रणनीति व रणकौशल मजदूरों और आम आदमी को समझनी चाहिए। मजदूर वर्ग को शिक्षित करने का काम हमें इस प्रकार करना चाहिए कि वह उनकी समझ में आ सके। एक बार वे सत्य को समझ लें तो उनके चेहरे इस विश्वास से दमक उठेंगे कि क्रान्ति सफल करने और मुक्ति का द्वार खोलने में वे सक्षम होंगे। यह संघर्ष उच्च क्रान्तिकारी चरित्र, नैतिकता, जुझारूपन, सैद्धान्तिक समझदारी, दृढ़ता और अनुशासन की माँग करता है। ये सब जरूरी हैं। कॉमरेडो, मैं अपना भाषण लम्बा नहीं करूँगा। पुनः मैं आपके सामने कॉमरेड शिवदास घोष की अपील पढ़ूँगा।

कॉमरेड आप जानते हैं कि हमारे महान नेता कॉमरेड शिवदास घोष की मृत्यु 1976 में हुई थी। उन्होंने 1974 में जो बताया था उसे मैं आपके सामने पढ़ूँगा, ''जनसाधारण लम्बे अर्से से जिस तरह के एक परिवर्तन की दिलोजान से कामना कर रहे हैं।...भारतीय समाज मुक्ति–यंत्रणा से छटपटा रहा है। सिर्फ लोगों के संगठित सचेत राजनैतिक आन्दोलन का अभाव है और जितनी न्यूनतम शक्ति होने से जनता के इस क्रान्तिकारी आवेग और क्रान्तिमुखी अवस्था को एक संगठित सतत दीर्घस्थाई क्रान्तिकारी लड़ाई में उतार दिया जाये, उतनी शक्तिसम्पन्न एक सही क्रान्तिकारी पार्टी का अभाव है। जबकि क्रान्ति की वस्तुगत परिस्थिति की सारी जमीन, 'इनग्रेडियेन्ट', गोलाबारूद सब तैयार है। लोग परिवर्तन चाह रहे हैं। पुराने समाज की फौजी ताकत पर निर्भर करने के अलावा शासक वर्ग के निर्भर करने लायक और कुछ नहीं है। इसके अलावा, वे लोगों की अज्ञानता और राजनैतिक विभ्रान्ति पर निर्भर कर रहे हैं–लेकिन यह बहुत बड़ी बात नहीं है। वास्तिविक स्थिति का दबाव लोगों पर इतना पड़ रहा है कि उस स्थिति के दबाव की वजह से विभ्रान्ति के तर्क, धर्म का मोह–ये सब कुछ ही लोगों को आने से रोक पाने में कामयाब नहीं हो पायेगा। क्रान्ति का ज्वार यदि शुरू हो गया तो किसी तर्क से लोगों को रोका नहीं जा सकेगा। तब क्रान्ति के खिलाफ सिर्फ एक ही हथियार बुर्जुआ वर्ग के पास बचेगा–वह फौज, पुलिस, गोलाबारूद। लेकिन एक देश, एक कौम कमर सीधी करके एक क्रान्तिकारी नेतृत्व के तहत सही क्रान्तिकारी लाइन के आधार पर लड़ाई शुरू कर दें तो क्या गोला–बारूद से उसे रोका जा सकेगा?... समाज में मजदूर–किसानों–आम लोगों के विक्षोभ को केन्द्र करके क्रान्ति बार–बार लहर के बाद लहर की तरह उभर कर आना चाहेगी, लहर के बाद लहर की तरह फूट पड़ना चाहेगी, समाज का अन्दरूनी द्वन्द्व उभर कर बार–बार कहना चाहेगा, इस स्थिति का आमूलचूल परिवर्तन होना चाहिए; यह लोगों के जमीर से, लोगों से अपील करना चाहेगा–क्रान्ति मुझे चाहिए। लेकिन क्रान्ति तब तक नहीं होगी, बार–बार वह वापिस लौट जाएगी, विपथगामी होकर वापिस चली जाएगी, बार–बार उससे प्रतिक्रिया फायदा उठा लेगी, क्रान्ति नहीं होगी जब तक कि क्रान्ति में नेतृत्व देने लायक उपयुक्त शक्ति लेकर क्रान्तिकारी पार्टी का आविर्भाव नहीं होगा। इसलिए आप याद रखें, सिर्फ क्रान्ति चाहिए– यह कोई क्रान्तिकारी चेतना नहीं है। इसी तरह मजदूर वर्ग, सर्वहारा वर्ग की चिन्ता करता हूँ–यह भी कोई सर्वहारा वर्ग चेतना नहीं है। सही क्रान्तकारी चेतना है सही सर्वहारा वर्ग चेतना और सही सर्वहारा वर्ग चेतना है सही

(शेष पृष्ठ 8 पर)

यूसीपीएन (माओवादी), नेपाल की 7वीं कांग्रेस में कॉमरेड असित भट्टाचार्य

नेपाली अवाम के ऐतिहासिक संघर्ष को किया सलाम, ली एकजुटता की शपथ

प्रिय अध्यक्ष, यूनिफाइड कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ नेपाल (माओवादी) के प्रिय महासचिव कॉमरेड पुष्प कुमार दहाल और यहां एकत्रित नेपाल के मेहनतकश अवाम,

मैं यहां आपकी पार्टी की सातवीं कांग्रेस के खुले उद्घाटन समारोह के इस महती अधिवेशन में सोशलिस्ट यूनिटी सेंटर ऑफ इंडिया (कम्युनिस्ट) का प्रतिनिधित्व कर रहा हूं। आपकी पार्टी ने नेपाली अवाम के ताकतवर क्रांतिकारी संघर्ष की अगुवाई कर आम तौर पर साम्राज्यवादियों द्वारा समर्थित निरंकुश राजशाही तथा पूंजीवादी भारतीय सरकार के गहरे जड़ जमाये साम्राज्यवादी मंसूबों और छोटे-छोटे पड़ोसी देशों के प्रति उसकी विस्तारवादी गिद्ध दृष्टि को शिकस्त देते हुए हमारे हृदय में और न सिर्फ हमारे देश बल्कि पूरी दुनिया की लाखों जनता के हृदय में एक विशिष्ट पहचान बनायी है। अत: सोशलिस्ट यूनिटी सेंटर ऑफ इंडिया (कम्युनिस्ट) की ओर से हम नेपाल की बहादुर जनता, अत्यंत बहादुर जनता को, निरंकुश राजशाही के इस क्रांतिकारी तख्तापलट के नेताओं को तथा यूनिफाइड कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ नेपाल (माओवादी) को लाल सलाम पेश करते हैं; जिन्होंने उस काफी प्रतिकूल अंतर्राष्ट्रीय परिस्थिति में हैरतअंगेज कामयाबी हासिल की, जब खास तौर पर अमेरिकी साम्राज्यवाद और आम तौर पर साम्राज्यवादी ताकतों के दबदबे में अंतर्राष्ट्रीय प्रतिक्रिया की ताकतों द्वारा दुनिया में कहर बरपाया जा रहा था। इसके खिलाफ आपके सशस्त्र जनवादी आंदोलन ने निरंकुश राजशाही का खात्मा कर उसे क्षत-विक्षत कर दिया।

कॉमरेडो और यहां एकत्रित मित्रो, आपके साथ-साथ हमारा भी दृढ़ विश्वास है कि अंतर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट आंदोलन जितने भी कठिन और तीव्र धक्के का शिकार क्यों न हुआ हो, दरअसल यह निहायत ही संक्रमणकालीन, अस्थायी स्थिति है, महज एक अस्थायी परिघटना है और जल्द ही हम इस पर काबू पा लेंगे, क्योंकि, मार्क्सवाद-लेनिनवाद एक सही विज्ञान ही नहीं, बल्कि विज्ञानों का विज्ञान होने के नाते अपराजेय सिद्धांत और दर्शन है। अंतिम विजय इसी की होगी। इसलिए यह अप्रतिरोध्य है।

हम कॉमरेड शिवदास घोष के छात्र होने के नाते यह महसूस करते हैं कि महान मार्क्सवादी दार्शनिक, नेता, शिक्षक कॉमरेड जे. वी. स्तालिन के देहांत के बाद ही क्रांति-विरोधी ख्रुश्चेव और उसके सहयोगियों के नेतृत्व में आधुनिक संशोधनवाद का मनहूस सिर उठाना ही मौलिक कारण और कारक है, जिसने धीरे-धीरे परास्त बुर्जुआ वर्ग और ट्राटस्कीवादी ताकतों के फिर से उभरने और नये सिरे से संगठित होने का मार्ग प्रशस्त किया और दुनिया के पूंजीवादी-साम्राज्यवादी ताकतों से संबंध कायम कर सोवियत संघ के क्रांतिकारी मजदूर वर्ग के क्रांतिकारी अगुआ दस्ते कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ सोवियत यूनियन (सीपीएसयू) में गुप्त रूप से अपने नापाक मंसूबों को अंजाम देने के मकसद से पैठ बनायी और अंतत: सोवियत संघ में प्रतिक्रांतिकारी तख्तापलट कर दिया। कॉमरेड और मित्रो, हमारा दृढ़ मत है कि आधुनिक संशोधनवाद कम्युनिस्ट आंदोलन में बुर्जुआ विचारों की घुसपैठ के सिवा और कुछ नहीं है। यह भी याद रखने की जरूरत है कि अंतर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट आंदोलन में काफी अर्सा पहले ही अपनी पैठ बना चुके द्वन्द्वात्मक चिंतन प्रक्रिया की जगह पर यांत्रिक चिंतन प्रक्रिया के दुर्भाग्यपूर्ण रुझान ने कम्युनिस्ट पार्टी के नेताओं और कार्यकर्ताओं के बीच तथा विभिन्न देशों की कम्युनिस्ट पार्टियों के बीच द्वन्द्वात्मक तरीके से विचारों के आदान-प्रदान व चर्चा-बहस को बुरी तरह से प्रभावित करते हुए इस विषैले आधुनिक संशोधनवाद को जन्म दिया। हमारा मानना है कि यह आधुनिक संशोधनवाद सिर्फ पूर्व के सोवियतस संघ में ही आबद्ध नहीं रहा, बल्कि पूर्वी यूरोप के तमाम समाजवादी देशों तथा अंत में चीन व वियतनाम में भी इसने अपना प्रभाव फैलाया, जहां उसी तरीके से, उसी मौलिक कारण से समाजवाद ध्वस्त हो गया और प्रतिक्रांति सम्पन्न हुई। इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता कि यह आधुनिक संशोधनवाद वहीं तक सिमटा हुआ नहीं रहा। इसने जल्दी ही दुनिया के मजदूर वर्ग के क्रांतिकारी आंदोलन में भी अपना प्रभाव फैलाया और उसमें निहित क्रांतिकारी जोश व क्रांतिकारी तेवर को खत्म कर दिया।

यूसीपीएन (माओवादी), नेपाल की 7वीं कांग्रेस में एसयूसीआई(सी) पोलिट ब्यूरो मेम्बर कॉमरेड असित भट्टाचार्य(बांये से दूसरे) और कॉ. अरूण कुमार सिंह

इसलिए हम मजबूती से इस बात को महसूस करते हैं कि मजदूर वर्ग के संघर्ष की प्रक्रिया को तेज करते हुए मनुष्य द्वारा मनुष्य के शोषण को हमेशा के लिए खत्म करने के जरिये महान मार्क्स द्वारा सुविचारित साम्यवाद के पहले का दौर वैज्ञानिक समाजवाद स्थापित करना होगा। इसके लिए अंतर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट आंदोलन को नुकसानदायक और विषैले आधुनिक संशोधनवाद से मुक्त करना होगा और दुनिया के सच्चे कम्युनिस्टों का यही सबसे पहला काम होगा।

कॉमरेडो और मित्रो, हम दृढ़तापूवर्क महसूस करते हैं कि इस ऐतिहासिक महान लक्ष्य को हासिल करने के लिए कम्युनिस्ट चेतना के स्तर को नयी ऊंचाई तक ले जाते हुए अंतर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट आंदोलन के अंदर मौजूद आधुनिक संशोधनवादी चिंतन के अंतिम कण तक को भी ध्वस्त कर निर्भीक गैर समझौतावादी वैचारिक संघर्ष की शुरूआत करनी होगी। मैं आपसे इस बात को पुन: कहने की अनुमति चाहूंगा कि इस अत्यावश्यक तथा निर्णायक बिन्दु पर हमारे प्रिय नेता, शिक्षक, पथ प्रदर्शक तथा इस युग के अग्रणी मार्क्सवादी चिंतक कॉमरेड शिवदास घोष ने अपने जीवन के अंतिम दम तक दुनिया के तमाम कम्युनिस्टों से बार-बार कहा कि वे समाज के साथ अपनी व्यक्ति सत्ता को विलीन करें, सामाजिक हित के साथ निजी हित का मेल कराकर बुर्जुआ व्यक्तिवाद के स्रोत का, उसके अवशेष का उन्मूलन करें, जो दुनिया के मजदूर वर्ग के आंदोलन की तरक्की तथा विकास के लिए काफी नुकसानदायक खतरनाक वैचारिक परिघटना साबित हो रही है। यही समय की अत्यावश्यक मांग है और यह काम जितना तेज होगा, हमारे क्रांतिकारी संघर्षों का उतना ही विकास होगा।

इस अति महत्वपूर्ण कार्यभार को ध्यान में रखते हुए हमारा दृढ़ मत है कि दुनिया के क्रांतिकारी आंदोलन का पुनर्जीवन और अंतर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट आंदोलन इस दोहरे कार्यभार से ओत-प्रोत रूप से जुड़ा हुआ है 1) अमेरिकी साम्राज्यवादियों की बढ़ती आक्रमणकारी बर्बर कार्रवाइयों और विभिन्न देशों के अन्दरूनी मामलों में उनकी खुली दखलअंदाजी पर सख्ती से रोक लगाना, और 2) दुनिया के सच्चे कम्युनिस्टों से घनिष्ठ सम्बन्ध कायम करना और समन्वित गतिविधियाँ करना। हम यह भी महसूस कर रहे हैं कि विभिन्न देशों के आजादी पसंद तथा जनवादी मानसिकता वाले लोगों, जिसमें सभी देशों के सच्चे कम्युनिस्ट केन्द्र में होंगे, को लेकर साम्राज्यवादियों, खास तौर पर अमेरिकी साम्राज्यवादियों के खिलाफ दुनिया भर में संयुक्त साम्राज्यवाद-विरोधी जुझारू शांति आंदोलन का विकास एक ओर साम्राज्यवादियों की कारगुजारियों के खिलाफ ताकतवर रुकावट पैदा करेगा, तो दूसरी ओर तमाम प्रासंगिक मुद्दों पर लगातार वार्तालाप, आपसी चर्चा-बहस और विचारों के आदान-प्रदान के लिए सर्वोत्तम अवसर प्रदान करेगा और यदि इसे द्वन्द्वात्मक तरीके से संचालित किया गया, तो अंतर्राष्ट्रीय पैमाने पर जरूर दृढ़तापूर्ण कम्युनिस्ट एकता बनेगी। हम सचमुच में इस बात में विश्वास करते हैं कि आपकी और हमारी पार्टी एक साथ मिलकर इस कठिन मोड़ पर इस रणनीतिगत लाइन को आगे बढ़ाने में निर्णायक भूमिका अदा कर सकती है।

अपनी बात समाप्त करने के पहले मैं आपकी लड़ाई की भूरि-भूरि प्रशंसा करता हूं, जिसे आपने लड़ा, विजय हासिल की और इसके जरिये आपने दुनिया के मजदूर वर्ग के क्रांतिकारी आंदोलन में नया जोश, नयी ताकत, दृढ़ विश्वास और यह भरोशा दिया है कि क्रांति अनिवार्य तौर पर होगी ही और मार्क्सवाद-लेनिनवाद हमेशा के लिए बरकरार रहेगा। तथ्य यह है कि आपके बहादुरीपूर्ण संघर्ष से हमने अपने देश में क्रांतिकारी मजदूर वर्ग आंदोलन के संचालन में काफी तजुर्बा हासिल किया है। निश्चित तौर पर इससे हमें काफी लाभ हुआ है। हम दृढ़ता के साथ आपको आश्वस्त करना चाहते हैं कि मार्क्स, एंगेल्स, लेनिन, स्तालिन और माओ की शिक्षाओं के अनुसार समाजवादी समाज स्थापित करने के आपके अंतिम लक्ष्य तथा मनुष्य द्वारा मनुष्य के हर तरह के शोषणों से मुक्ति पाने के मार्ग में आगे बढ़ने में आपको हमारा भरपूर सहयोग व समर्थन मिलेगा, जैसा कि राजशाही को उखाड़ फेंकने के पिछले क्रांतिकारी संघर्ष में मिला। भारत की बुर्जुआ सरकार नेपाल के अंदरूनी मामलों में किसी भी तरह से हस्तक्षेप न कर सके, इसके लिए हम भारत के एक सिरे से दूसरे सिरे तक ताकतवर जन आंदोलन विकसित करने की जीतोड़ कोशिश करेंगे। हमारा दृढ़ विश्वास है कि भारत की आजादी पसंद जनता जरूर हमारा साथ देगी।

हम तहेदिल से आपकी ऐतिहासिक 7वीं कांग्रेस की शानदार सफलता की कामना करते हैं। नेपाल के क्रांतिकारी अवाम को क्रांतिकारी अभिवादन करते हुए मैं अपनी बात समाप्त करता हूं।

इंकलाब जिन्दाबाद
मार्क्सवाद-लेनिनवाद जिन्दाबाद
सर्वहारा अंतर्राष्ट्रीयतावाद जिन्दाबाद
भारत और नेपाल की जनता की एकता जिन्दाबाद

R.N.I. No.- 43022/85
P.R.No.-DL(C)-01/1123/2012-2014
Posting at IPMBC on 7–8 and 22–23 Fortnightly, Date of Printing : 20 February, 2013

प्रतिरोध होने पर पीछे हटा पास्को प्रबंधन

दक्षिण कोरिया की स्टील कम्पनी पॉस्को के कारखाने के लिए 2 फरवरी से ओडिशा की बीजू जनता दल सरकार फिर जमीन अधिग्रहण पर उतर आई। ग्रामीणों द्वारा जमीन अधिग्रहण का विरोध के बावजूद पिछले साल सरकार ने 2000 एकड़ भूमि जबरन अधिग्रहण कर ली थी। जगतसिंहपुर जिले के गोविंदपुर गाँव में प्रस्तावित कारखाने के लिए सरकार से हुए समझौते के मुताबिक 700 एकड़ भूमि अधिग्रहण करने को सुबह-सुबह सशस्त्र बल की 20 कम्पनियाँ अंधेरे का फायदा उठा कर वहाँ उतार दी गई। 15 पानबाड़ियाँ उजाड़ दी गई, 40 से ज्यादा पेड़ काट डाले गये। खबर लगते ही ग्रामीणों ने विरोध करना शुरू किया। सशस्त्र पुलिस बल को रोकने के लिए औरतों और बच्चों ने मानव प्राचीर बना डाली। देशी-विदेशी पूँजी की स्वार्थरक्षक नवीन पटनायक सरकार को यह नागवार लगा। जबरन जमीन अधिग्रहण करने के लिए पुलिस ने निहत्थे ग्रामीणों पर बेधड़क लाठीचार्ज किया। इससे 25 से ज्यादा औरतें और बच्चे घायल हुए। इस हमले के खिलाफ पॉस्को-विरोधी संग्राम समिति के आन्दोलन में एसयूसीआई(कम्युनिस्ट) व अन्य वाम दल भी गरज उठे। सरकार के इस निरंकुश फैसले के खिलाफ उन्होंने संयुक्त जुलूस निकाला, प्रतिरोध जारी रखने के लिए ग्रामीणों को लामबंद किया। प्रतिवाद जुलूस में शामिल होकर हजारों लोगों ने अपना रोष जताया। 7 फरवरी को एसयूसीआई(कम्युनिस्ट) की ओडिशा राज्य कमेटी सदस्य कॉमरेड वीणापाणि दास के नेतृत्व में 5 सदस्यीय प्रतिनिधिमण्डल ने जगतसिंहपुर के थिनकिया, गोविंदपुर में जाकर आन्दोलनकारियों के साथ एकजुटता का इजहार किया।

'हत्यारे मोदी वापिस जाओ' दिल्ली के छात्रों ने उठाई आवाज

गुजरात में अल्पसंख्यकों की मौत के नायक नरेन्द्र मोदी को दिल्ली के श्रीराम कॉलेज ऑफ कॉमर्स में 6 फरवरी को आमंत्रित किये जाने पर छात्र संगठन एआईडीएसओ ने कॉलेज व विश्वविद्यालय प्रशासन की कड़ी आलोचना की। नरेन्द्र मोदी शिक्षा जगत की ऐसी कोई हस्ती नहीं हैं जिनकी कॉलेज परिसर में आवभगत की जाए। उनके मुख्यमंत्री काल में जिस तरह चुन चुन कर अल्पसंख्यकों की हत्याएं की गई, औरतों की इज्जत लूटी गई जिससे उन्हें सारे देश में इस दौरान धिक्कारा गया। ऐसे एक आदमी को सादर आमंत्रित करना कॉलेज की मान-मर्यादा के उलट है। दूसरे, मोदी के नेतृत्व में गुजरात के विकास की जो ढिंढ़ोरा पीटा जाता है वह भी झूठा प्रचार है। गुजरात की अस्मिता के नाम पर मोदी शासन घोर जनविरोधी है। मोदी ने शिक्षा का निजीकरण ही नहीं, बल्कि साम्प्रदायिकीकरण भी किया है। इस हेय मोदी को आगामी चुनाव में प्रधानमंत्री पद के उम्मीदवार के तौर पर पेश करने का लक्ष्य लेकर छात्र-नौजवानों के सामने लोकप्रिय बनाने की कोशिश को प्रगतिशील छात्रसमाज का हिस्सा होने के नाते एआईडीएसओ मान नहीं सकता। छात्रों ने कॉलेज के सामने रोष प्रदर्शन किया। लेकिन कॉलेज प्रबंधन ने पुलिस बुला कर छात्रों पर बेरहमी से लाठीचार्ज करवाया जिसमें डीएसओ के तीन कार्यकर्ता घायल हुए।

संगठन की दिल्ली राज्य कमेटी ने एक बयान जारी कर इसकी कड़ी आलोचना करते हुए छात्र-शिक्षक-कर्मचारियों सहित सद्बुद्धिसम्पन्न लोगों को प्रतिवाद में आगे आने का आह्वान किया है। उल्लेखनीय है कि अन्य कई वामपंथी छात्र संगठन भी रोष प्रदर्शन में शामिल थे।

राँची में बेदखली विरोधी आन्दोलन की जीत

2 से 7 फरवरी तक हजारों लोगों ने झारखण्ड की राजधानी राँची की सड़कों पर उतर कर बस्ती उजाड़ने की सरकारी जोर-जबरदस्ती को रोक दिया। 2 फरवरी को राँची के हेवी इन्जीनियरिंग कारपोरेशन (एचईसी) की अथोरिटियों की घोषणा थी कि हर 15 दिन के अन्तराल पर एक एक करके कुल 28 मजदूर बस्तियों को वे बुलडोजरों से मटियामेट कर देंगे। इसके खिलाफ 2 फरवरी से ही बस्ती बचाओ संघर्ष समिति के नेतृत्व में लगभग 10 हजार लोगों ने जुलूस निकाल कर एचईसी गेट पर सभा की। 4 फरवरी से शुरू हो गया अभूतपूर्व प्रतिरोध। 28 बस्तियों के लगभग डेढ़ लाख लोग उस दिन सुबह से ही सड़कों पर उतर आये। बच्चों, औरतों और बुढ़ों को सामने रख कर बना दिये प्रतिरोध के बैरिकेड। पुलिस, रैपिड एक्शन फोर्स, वाटर कैनन, बन्दूक, लाठी लेकर आने पर भी लोग अडिग रहे। चार दिन लगातार प्रतिरोध चला। इन दिनों बच्चे भी रास्ते छोड़ कर नहीं गये। स्वयंसेवकों ने ही उनकी देखभाल की। लोगों की इस अडिग दृढ़ता के सामने पुलिस को पीछे हटना पड़ा। बस्ती उजाड़ना फिलहाल स्थगित करने की घोषणा प्रशासन को करनी पड़ी।

सर्वभारतीय बुर्जुआ मीडिया द्वारा इस आन्दोलन को कोई प्रचार न दिया जाने पर भी इस आन्दोलन के प्रभाव से इस बस्ती उजाड़े जाने के खिलाफ जमशेदपुर, पलामौ, धनबाद में नये सिरे से आन्दोलन शुरू हो गया है। राँची के एचईसी कारखाने के मजदूर बस्तियों के बाशिन्दों के पास सब तरह के वैध दस्तावेज होने के बावजूद खनिज व वनज सम्पदा से सम्पन्न झारखण्ड के सबसे महत्वपूर्ण इस शहर की जमीन को लेकर हजारों हजार करोड़ रुपये के कारोबार के स्वार्थ में कारखाना प्रबन्धन और सरकार के बस्तियाँ उजाड़ने के इस फैसले का एसयूसीआई(कम्युनिस्ट) ने कड़ा विरोध किया है। पार्टी की ओर से माँग की गई है कि बस्तीवासियों के लिए बढ़िया फलैट बना कर सब का पुनर्वास किया जाए।

प्रसंगवश उल्लेखित है कि राँची में आदिवासियों की ज्यादातर जमीन ही अब जमीन हड़पने वाले प्रोपर्टी डीलरों और शासक पार्टी के नेताओं ने हथिया ली है। इन लोगों के आन्दोलन के साथ एसयूसीआई(सी) शुरू से ही है। बस्ती बचाओ संघर्ष समिति गठित करने के क्षेत्र में भी इसी पार्टी के कार्यकर्ताओं ने पहलकदमी की थी। पार्टी के सांसद डा. तरुण मण्डल ने दिल्ली में इस आन्दोलन की आवाज उठायी थी। 2011 में इस समिति के नेतृत्व में हुए आन्दोलन में जिन लोगों में कुछ दुविधा थी, वे भी इस बार जिस तरह डट कर खड़े हुए वह पूरे देश के आन्दोलन के लिए सीखने लायक है।

2 फरवरी को बस्ती बचाओ समिति के नेतृत्व में विशाल जनसभा एचईसी गेट पर

एआईयूटीयूसी.....

(पृष्ठ 6 का शेष)

पार्टी चेतना–अर्थात् आप सही क्रान्तिकारी पार्टी को पहचान पाये हैं या नहीं।''☆☆ यह उन्होंने 1974 में कहा था। जो बात उस समय सच थी वह आज और भी ज्यादा सच है। मैं 1969 में की गई उनकी इस अपील को फिर दोहराता हूँ, ''आप मजदूर हैं, यदि यह सबसे महान सभ्यता है तो यह सभ्यता मुक्ति देने के कगार पर है, मेरी आपसे गुजारिश है कि न केवल आपकी अपनी मुक्ति बल्कि पूरी मानवजाति की मुक्ति हासिल करना इसके साथ बाबस्ता है।''☆☆☆

एआईयूटीयूसी के नेता-कार्यकर्ताओं को खुद से पूछना है कि क्या वे हमारे दिवंगत नेता की इस पुरजोर अपील का प्रत्युत्तर देंगे। यह सम्मेलन केवल तभी सफल होगा जब वे सकारात्मक प्रत्युत्तर दे सकेंगे। महान मार्क्स-एंगेल्स के इन ऐतिहासिक शब्दों के साथ मैं अपनी बात समाप्त करता हूँ–सर्वहारा के पास खोने के लिए गुलामी की बेड़ियों के सिवा और कुछ नहीं है, जीतने को पूरी दुनिया है। समाप्त करने से पहले मैं मेजबान प्रांत के नेता-काग्रकर्ताओं को इस सम्मेलन को सफल बनाने के लिए किये गये उनके सराहनीय अथक प्रयासों के लिए धन्यवाद देता हूँ। आप सबको लाल सलाम, सर्वहारा के महान नेता कॉमरेड शिवदास घोष लाल सलाम, मार्क्सवाद-लेनिनवाद-शिवदास घोष चिन्तनधारा जिन्दाबाद, सर्वहारा अन्तर्राष्ट्रीयतावाद जिन्दाबाद, एआईयूटीयूसी जिन्दाबाद।

☆ भारत का सांस्कृतिक आन्दोलन और हमारा कर्तव्य
☆☆ एक महान क्रान्तिकारी चरित्र को श्रद्धांजली
☆☆☆ लेबर पोलिसी ऑफ यूनाइटेड फ्रन्ट इन वेस्ट बेंगाल

आवश्यक सूचना

पाठकों से अनुरोध है कि स.दृ. का अपना वार्षिक सदस्यता शुल्क रु. 50 जल्द से जल्द निम्न पते पर जमा करें :

सम्पादक, सर्वहारा दृष्टिकोण, 3A/38, करोलबाग, नई दिल्ली-110005

सोशलिस्ट यूनिटी सेन्टर ऑफ इण्डिया की ओर से कॉ. गिरिजेश्वर सिंह द्वारा 3ए/38, डब्ल्यू.ई.ए., करोल बाग. नई दिल्ली-5 से संपादित व प्रकाशित तथा परम्परा प्रिंटिंग प्रेस, बी-70/83, इण्डस्ट्रियल एरिया, लॉरेंस रोड, दिल्ली-35 से मुद्रित, दूरभाष: 011-25726631, E-mail: sarvaharadrishtikon@yahoo.com